हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 14 - 20 September 2025

हिंदी भाषा मन की भाषा

पितांबरी
अभिनव उत्पाद
दीपशक्ती®
दिये का तेल
उत्सव दुर्गा देवी का,
अखंड दिया
दीपशक्ती का !
For Diya & lamps only
Pitambari
Deepshakti
With Goodness of Dark Sesame Oil
Power of Spirituality!
Not for Edible Use
तिल के गुणों से युक्त
प्रसन्न सुगंध
धुआ नहीं होता और
दिया लंबे समय तक जलता है
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 6366932555,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564 / 5699.
Toll Free: 18001031299. Visit: www.pitambari.com/shop I CIN: U52291MH1989PTC051314.

अनुक्रमणिका

हिंदी के बढ़ते कदम	वेदप्रकाश पांडे	04
हिंदी के सामने बौनी अंग्रेजी	लोकेंद्र सिंह	06
साहित्यकारों व संस्थाओं को जोड़ती हिंदी	ऋषि कुमार मिश्र	08
स्वदेशी अपनाएं विदेशी नहीं	डॉ. हिमांशु थपलियाल	10
वैश्विक मंच पर हिंदी की पहचान	दीपक द्विवेदी	13
कृत्रिम बुद्धि से विस्तृत होती हिंदी	मीनाक्षी दीक्षित	15
हिंदी का बढ़ता दायरा	डॉ. शुभ्रता मिश्रा	17
हिंदी और युवाओं की भूमिका	डॉ. रविंद्र सिह भड़वाल	19
न्याय की आस में हिंदी	गिरिजेश कुमार त्रिपाठी	21
लोकगीतों व लोककलाओं में हिंदी का स्थान	मनोज कुमार 'बच्चन'	24
सिनेमा में हिंदी की भूमिका	राजीव रोहित	26
हमीं से मुहब्बत, हमीं से लड़ाई	अतलु गंगवार	28
वीक हिंदी वालों का हिंदी वीक	मुकेश जोशी	30
कविता	मार्कण्डेय त्रिपाठी	32

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

दक्षिण भारत के राज्यों में भी अब हिंदी का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। देश की भावी पीढ़ी अब अपनी मातृभाषा के साथ ही साथ हिंदी को भी प्रमुखता दे रही हैं क्योंकि उन्हें भी लग रहा है कि हिंदी पूरे देश की भाषा है इसलिए हिंदी पढ़ना उनके लिए लाभदायक होगा।

हिंदी के बढ़ते कदम

वेदप्रकाश पांडे

भारत सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए समय-समय पर अनेक कदम उठाए जाते रहे हैं। प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को पूरे देशभर में केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों सहित शिक्षण संस्थानों, बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के कार्यालयों में हिंदी दिवस मनाया जाता है। इसके साथ ही महीने भर हिंदी सप्ताह, पखवाड़ा तथा माह आदि भी आयोजित होते हैं। हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। अहिंदी भाषी कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाता है। दक्षिण भारत के राज्यों में भी केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी दिवस के आयोजन होते हैं।

स्वार्थपरक राजनीति से प्रेरित हिंदी का विरोध

तमिलनाडु में हिंदी का विरोध तो कोई नई बात नहीं है, किंतु अब हिंदी को लेकर देश के अन्य राज्यों में भी विरोध के स्वर उठना गम्भीर चिंता का विषय है। हालांकि यह विरोध पूर्ण रूप से राजनीतिक स्वार्थ से प्रेरित ही लगता है। सदियों से भारत विविध पंथ, मत, संस्कृतियों, भाषाओं एवं जातियों की विविधतावाला देश रहा है और आज भी है। हिंदी भारत की पहचान और राष्ट्रीय एकता की मजबूत कड़ी है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पूरे देश की भाषा बनी। यही कारण था कि जब स्वतंत्रता के बाद भारत का संविधान बनकर लागू हुआ तो उसमें इसे राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। इसे भारत की राष्ट्रीय भाषा का दर्जा मिला हुआ है। उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक देश के प्रत्येक राज्य में हिंदी ही सम्पर्क भाषा के रूप में काम करती है, परंतु

वर्तमान में राजनीतिक विद्वेष की भावना तथा सियासी लाभ के लिए राजनीतिक दलों का भाषा विवाद को बढ़ावा देना कत्तई उचित नहीं माना जा सकता।

हिंदी थोपे जाने का निराधार आरोप

दक्षिण भारत के राज्यों में मुख्यत: तमिलनाडु में हिंदी का विरोध द्रविड़ आंदोलन से जुड़े राजनीतिक दलों के लिए मुख्य आधार रहा है। इसलिए वहां समय-समय पर हिंदी विरोध का स्वर पहले भी उठता रहा है और आज भी यह क्रम जारी है। जब भारत सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति लागू की गई, जिसमें त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को अंग्रेजी के अलावा कोई दो भारतीय भाषाओं को चुनने का विकल्प दिया गया है। दो भारतीय भाषाओं में एक विद्यार्थी की अपनी मातृभाषा और दूसरी भाषा हिंदी हो सकती है। इसमें किसी पर कोई भाषा थोपे जाने का प्रश्न ही नहीं उठता, पर भाषा की राजनीति करने वाले तमिलनाडु के मुख्य मंत्री एम.के. स्टालिन को यह बात कैसे रास आती, उन्होंने अपनी भाषाई राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए कहा कि तीन भाषा क्यों? दो भाषा क्यों नहीं? उनकी मंशा यह रही कि वे तमिल और अंग्रेजी को अनिवार्य बनाकर राज्य में अन्य किसी भी भारतीय भाषा को पढ़ाए जाने का विकल्प ही समाप्त कर दें। इसलिए सत्तारूढ़ डीएमके ने हिंदी थोपे जाने का आरोप लगा दिया और अगले वर्ष होने वाले राज्य विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए हिंदी के विरोध की चिंगारी भड़का दी।

प्रश्न यह उठता है कि जब शिक्षा नीति में किसी भी भारतीय भाषा को विशेष रूप से हिंदी को पढ़ाए जाने की अनिवार्यता नहीं है, अपितु कोई भी दो भारतीय भाषा चुनने का अधिकार विद्यार्थियों को दिया गया है तो फिर थोपने की बात कहां से आ गई, किंतु राजनेताओं को तो बस बांटने का अवसर चाहिए होता है।

तमिलनाडु में हिंदी थोपे जाने के नाम पर नई शिक्षा नीति को लागू नहीं किया गया। इसका असर पड़ोसी राज्य कर्नाटक पर भी हुआ। कर्नाटक में सत्ता परिवर्तन होने के बाद मुख्य मंत्री सिद्धरामय्या के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनी तो यहां भी नई शिक्षा नीति के विरोध में कदम उठाते हुए अलग राज्य शिक्षा नीति बनाने का निर्णय लिया गया। हैरानी की बात यह है कि कर्नाटक में हिंदी विरोध को हवा देने का काम उस राष्ट्रीय राजनीतिक दल कांग्रेस की ओर से किया गया, जो अपने आपको महात्मा गांधी की विरासत का उत्तराधिकारी कहती है। वही महात्मा गांधी जिन्होंने हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही और जिन्होंने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की थी। भाषा के नाम पर कांग्रेस की स्थिति दो मुंहवाले सांप जैसी हो जाती है। उत्तर भारत में अलग और दक्षिण भारत में अलग, जबकि कर्नाटक में नई शिक्षा नीति के लागू होने से पहले भी कई दशकों से सरकारी स्कूलों में त्रिभाषा फामूर्ला के अंतर्गत हिंदी की पढ़ाई हो रही थी।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अलावा कई संस्थाएं जैसे- मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति आदि लम्बे समय से हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा विभिन्न प्रशिक्षण परीक्षाओं के संचालन में लगी हुई थीं। अब राज्य की नई शिक्षा नीति में क्या होगा? इसको लेकर हिंदी के शिक्षक और विद्यार्थी दोनो सशंकित हैं। केंद्र सरकार ने जब सभी राज्यों में नवोदय विद्यालय खोले तो तमिलनाडु में नवोदय विद्यालय नहीं खोलने दिया गया क्योंकि इनमें हिंदी पढ़ाई जाती है, जबकि हिंदी के नाम पर नवोदय विद्यालयों का विरोध करने वाले राजनीतिक दलों के कई ऐसे नेता हैं, जिनके द्वारा संचालित निजी शिक्षण संस्थानों में हिंदी भी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। तमिलनाडु में ही चेन्नई स्थित दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के 100 वर्ष पूरे हो चुके हैं, जिसकी स्थापना स्वयं महात्मा गांधी ने की थी। यहां प्रत्येक वर्ष हिंदी पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या में बढ़ोत्तरी होता रहा है। केंद्र सरकार पहले ही यह साफ कर चुकी है कि उसकी किसी भी राज्य पर कोई भी भाषा थोपने की कोई मंशा कभी नहीं रही।

●●●

संवाहिका

हिंदी के सामने बौनी अंग्रेजी

अंग्रेजी की भाव-भूमि अलग है और हिंदी के उद्गम का स्रोत अलग, इसलिए भारत की बातों को हिंदी ही सही अर्थों में अभिव्यक्त कर सकती है, अंग्रेजी नहीं। हम सदैव स्मरण रखें कि हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं बल्कि भावनाओं, संस्कृति और ज्ञान की संवाहिका है। इसकी शब्द-सम्पदा हमें गर्व और समृद्धि का अनुभव कराती है।

हिंदी विश्व की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक है। हिंदी के पास अपना विशाल शब्दकोश है, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं के अनूठे शब्द हैं। बोलियां भी हिंदी के शब्दकोश और सौंदर्य में वृद्धि करती हैं। अपने सर्वसमावेशी स्वभाव के चलते हिंदी ने बाहरी भाषाओं के शब्दों को भी अपने आंचल में स्थान दिया है, जिससे हिंदी का शब्द भंडार और अधिक समृद्ध हुआ है। हिंदी की एक और सबसे बड़ी विशेषता है कि इसके शब्दकोश में अलग-अलग भाव, स्थिति, सम्बंध को व्यक्त करने के लिए एक ही शब्द के पर्यायवाची शब्द भी हैं। यह विशेषता अन्य भारतीय भाषाओं में भी है, परंतु जिस अंग्रेजी को वैश्विक भाषा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, उसके पास यह सामर्थ्य नहीं है। इस मामले में अंग्रेजी हमारी हिंदी के पासंग भी नहीं ठहरती है।

एक सामान्य उदाहरण हम सब देते ही हैं कि हिंदी में आत्मीय रिश्तों को अभिव्यक्त/सम्बोधित करने के लिए अनेक शब्द हैं, जो सम्बंधित व्यक्ति के साथ हमारे रिश्ते को स्पष्ट रूप से बताते हैं। जैसे:- चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मौसा-मौसी, मामा-मामी इत्यादि रिश्तों की अपनी विशिष्टता है, जो इन शब्दों से पता चलती है। अंग्रेजी में इन सबके लिए एक ही सम्बोधन है- अंकल और आंटी। अंग्रेजी में अंकल-आंटी कहने से पता नहीं चलता कि सामने वाले चाचा-चाची हैं या मामा-मामी। अंग्रेजी तो ढंग से गुरु और शिक्षक में भी अंतर नहीं कर सकती।

अन्य शब्दों के संदर्भ में भी हम हिंदी-अंग्रेजी के इस अंतर को देख सकते हैं। हिंदी में पानी के कई पर्यायवाची शब्द हैं- जल, नीर, तोय, अमृत, पय, सलिल आदि,

लोकेंद्र सिंह

जबकि अंग्रेजी में केवल 'वॉटर' शब्द ही प्रचलित है। अब यहां यह भी समझने की बात है कि पानी का प्रत्येक पर्यायवाची अगल भाव और स्थिति को बताता है। हम आम बोल-चाल में पानी शब्द का उपयोग करते हैं- एक गिलास पानी दीजिए, पौधों में पानी दे दो, नल में पानी आ गया इत्यादि, पर जब हम धार्मिक अनुष्ठान में बैठे हैं और पूजन की दृष्टि से पानी की आवश्यकता है तब हम कभी नहीं कहते कि एक लौटा पानी दे दो। उस समय हमारे मुंह से यही निकलता है कि एक लौटे या कलश में जल दे दीजिए। भारत का पोषण करने वाली मां गंगा में भी पानी नहीं, जल प्रवाहित होता है। वैज्ञानिक संदर्भ में जल का उपयोग किया जाता है। वहीं, नीर का प्रयोग शुद्ध, स्वच्छ और निर्मल पानी के लिए किया जाता है। तालाब और झील का पानी 'तोय' है। बहता हुआ पानी 'सलिल' है और वर्षा जल को कहते हैं 'वारि'।

इसी प्रकार आग के स्वभाव और कार्य के आधार उसका नामकरण है। पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन, धार्मिक अनुष्ठान और साहित्यिक प्रयोग में यह अग्नि है, परंतु जब यह भड़क उठती है तो 'ज्वाला' बन जाती है। क्रोध को अभिव्यक्त करने के लिए भी 'ज्वाला' शब्द का प्रयोग होता है। जंगल की आग 'दावानल' और समुद्र के भीतर आग लगी हो तो 'बड़वानल' है। अनल शब्द का उपयोग उस आग को दर्शाने के लिए किया जाता है जो अपनी शक्ति और निरंतरता के लिए जानी जाती है, जिसका जलना कठिन होता है। यह शब्द आम बोलचाल के शब्द 'आग' की तुलना में अधिक साहित्यिक और काव्यमय माना जाता है। इसका प्रयोग प्राय: कविताओं, गीतों और औपचारिक भाषा में किया जाता है।

जरा आसमान की ओर देखिए, वहां चमक रहे सूर्य के लिए अंग्रेजी में केवल 'सन' है, पर हिंदी में सूर्य, रवि, भानु, आदित्य और दिनकर आदि भी है। चंद्रमा को तो हम आत्मीयता से मामा भी कह देते हैं। देवता के रूप में हम 'सोम' कहते हैं। पूर्णिमा की रात के ईश्वर के रूप यह 'राकेश' हो जाता है। जब कविता लिखनी हो तो मयंक, विधु, चांद और चंद्र का उपयोग अधिक करते हैं। खरगोश के आकार का धब्बा दिखने के कारण यह 'शशि' और 'शशांक' भी कहलाता है। ग्रहण के समय 'चंद्र' होगा।

उपरोक्त उदाहरणों से ध्यान आता है कि अंग्रेजी में एक अर्थ के लिए सीमित शब्द होते हैं, पर हिंदी में शब्दों की बहुलता इसे अधिक लचीला और भावपूर्ण बनाती है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य में कवि और लेखक अलग-अलग शब्दों का चयन करके अपने भावों की गहराई व्यक्त करते हैं।

हम जानते हैं कि भाषा के विकास में संस्कृति का अत्यधिक महत्व रहता है। संस्कृति के खाद-पानी से ही भाषा पल्लवित-पुष्पित होती है। उसका सौंदर्य समृद्ध होता है। हिंदी और अंग्रेजी की कुछ कहावतों में हम इस अंतर को देख सकते हैं। जहां हिंदी की कहावतें रचनात्मक और सकारात्मक दृष्टिकोण देती हैं, वहीं उन्हीं संदर्भ में अंग्रेजी की कहावतों में नकारात्मक पुट है। जैसे- हम किसी के बारे में चर्चा कर रहे हैं और वह अचानक से हमारे सामने आ जाए तो हम कहते हैं कि आपकी आयु बहुत लम्बी है। हम आपको ही याद कर रहे थे और आप आ गए। वहीं, इसी परिस्थिति के लिए अंग्रेजी में कहावत है- थिंक ऑफ डेविल, डेविल इज हियर अर्थात शैतान का नाम लिया, शैतान हाजिर। मतलब हम अपने मित्र/परिचित को शैतान के रूप में देखते हैं क्या? जब हम एक साथ दो काम साधते हैं तो उसके लिए सुंदर कहावत है- 'एक पंथ-दो काज' वहीं, अंग्रेजी में कहते हैं- 'टू किल टू बर्ड्स विथ वन स्टोन' और 'वन एरो, टू स्पैरो' अंग्रेजी की कहावत में हिंसक दृष्टि है। हम ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखते हैं और उसकी भूमिका को सृजनात्मक रूप में देखते हैं। हिंदी का कवि लिखता है- होई सोई जो राम रची राखा। वहीं, अंग्रेजी में कहा गया है- मैन प्रोपोसेज़, गॉड डिस्पोसेज। दोनों कहावतें जीवन में नियति और ईश्वर की इच्छा की भूमिका को दर्शाती हैं, परंतु दोनों की सांस्कृतिक और भावार्थिक व्याख्या में बहुत बड़ा अंतर दिखाई देता है।

फ्रेंच की 'एलीट' पहचान को पीछे धकेलकर भले ही अंग्रेजी इंग्लैंड में महारानी बन गई हो, परंतु भारत में वह हिंदी की जगह नहीं ले सकती। शब्दकोश के मामले में अंग्रेजी की दरिद्रता भारत में साफ दिखाई देती है। भारत की बातों, परम्परा, व्यवहार और चीजों के लिए अंग्रेजी के पास उपयुक्त शब्द ही नहीं है। धर्म को अभिव्यक्त कर सके, ऐसा कोई शब्द अंग्रेजी के पास नहीं है। 'पाप' की कल्पना तो अंग्रेजी ने कर ली क्योंकि ईसाईयत का मत है कि मनुष्य की उत्पत्ति पाप से हुई है, किंतु अंग्रेजी के पास 'पुण्य' के लिए कोई उपयुक्त शब्द नहीं है। हम 'अमृतस्य पुत्र' हैं। मोक्ष की कल्पना भी अंग्रेजी में नहीं है। आत्मज्ञान, किंकर्तव्यविमूढ़, अंतर्ध्यान, नमस्कार और प्रणाम के आगे अंग्रेजी नतमस्तक है। उसके पास घी, रोटी, चटनी का विकल्प भी नहीं है। एक लम्बी सूची है, जहां अंग्रेजी के कदम ठिठक जाते हैं।

साहित्य

साहित्यकारों व संस्थाओं को जोड़ती हिंदी

ऋषि कुमार मिश्र

हिंदी भाषा के उत्थान में जहां साहित्यकारों का विशेष योगदान हैं, वहीं कई ऐसी संस्थाएं हैं जो इनके योगदानों व हिंदी के विस्तार के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

हिंदी भारत के सर्वाधिक भू-भाग और सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी को लगभग 1 हजार वर्ष की विकास यात्रा के बाद वर्तमान स्वरुप प्राप्त हुआ है। हिंदी भाषा और साहित्य के क्रमिक विकास का प्रमाणिक लेखा-जोखा आचार्य रामचंद्र शुक्ल की पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में किया गया है।

भारत की सभी भाषाओं का उद्गम संस्कृत से हुआ है। संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत और प्राकृत से अपभ्रंश। ये आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास मार्ग के मुख्य पड़ाव रहे हैं। हिंदी का प्रारम्भिक रूप सन 1000 से 1325 ई. के कालखंड में दिखाई देता है जिसे आचार्य शुक्ल ने वीरगाथा काल कहा है। तत्पश्चात सन 1325 से 1650 तक भक्तिकाल और 1650 से 1850 का कालखंड रीतिकाल के नाम से जाना जाता है।

हिंदी का आधुनिक काल 1850 ई. से प्रारम्भ हुआ जिसे उसके प्रतिनिधि साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम पर 'भारतेंदु युग' के नाम से भी जाना जाता है। भारतेंदु की प्रारम्भिक रचनाएं हिंदी की एक बोली ब्रज- भाषा में थीं, पर परवर्ती रचनाओं में हिंदी की खड़ी बोली अर्थात वर्तमान मानक हिंदी का स्वरुप स्पष्ट झलकने लग गया था। खड़ी बोली मेरठ, अलीगढ दिल्ली के आसपास बोली जाने वाली भाषा थी, जिसका परिष्कृत रूप कालांतर में आधुनिक हिंदी के रूप में स्वीकृत हुआ।

भारत के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन का प्रथम विस्फोट भी इसी कालखंड में 1857 ई. में हुआ था। यह एक संयोग मात्र नहीं है बल्कि इस बात का सूचक है कि हिंदी अपने वर्तमान स्वरुप में भारतीय जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वाधीनता के संघर्ष में अपनी राष्ट्रीय भूमिका निभाने के लिए पूर्णतया तैयार हो चुकी थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र 'अंधेर नगरी' नाटक में अंग्रेजी शासन की दुर्नीति और 'भारत दुर्दशा' लिखकर भारतीय जनता की दुर्दशा का बखान कर चुके थे। वे अन्य जन नायकों की भांति स्वाधीनता प्राप्ति में ही भारत की सर्वांगीण उन्नति देखते थे। वे स्वाधीनता प्राप्ति के संघर्ष में हिंदी

की भूमिका का भी प्रखरतापूर्वक उल्लेख कर रहे थे। उनके द्वारा लिखित दोहा आज भी हर हिंदी प्रेमी को याद है -

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल।।

भारतेंदु युग के बाद हिंदी साहित्य का दूसरा युग महान साहित्यकार एवं पत्रकार महावीर द्विवेदी के नाम पर 'द्विवेदी युग'(1900-1920) कहा जाता है। द्विवेदी जी द्वारा सम्पादित 'सरस्वती' पत्रिका ने हिंदी नवजागरण और भाषा के व्याकरण सम्मत मानकीकरण में उल्लेखनीय योगदान दिया। हिंदी भाषा और साहित्य के आर्किटेक्ट के रूप में उनकी ख्याति है।

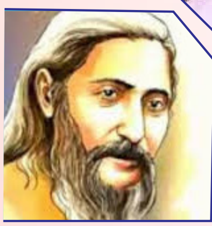

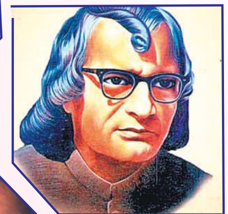

हिंदी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को गति और व्यापकता देकर अपनी राष्ट्रीय उपयोगिता और सर्व स्वीकार्यता सिद्ध करने में सफलता प्राप्त की थी। हिंदी की इसी विशेषता को पहचान कर भारत के सभी राष्ट्र पुरुषों और नायकों ने हिंदी को स्वाधीन भारत की राष्ट्र भाषा की अधिकारिणी भाषा माना है। तथापि राजनीतिक दुश्चक्रों में फंसकर हिंदी भारतीय संविधान के पृष्ठों में राजभाषा का पद ही प्राप्त कर सकी, परंतु राष्ट्रप्रेमी जनता के हृदयों में हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा है।

स्वाधीनता संघर्ष के दौरान म. गांधी ने स्वदेशी वस्तुओं के साथ-साथ हिंदी को भी राष्ट्र जागरण का हथियार बनाया था। गांधी जी की प्रेरणा से 1936 ई. में महाराष्ट्र के वर्धा में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और राष्ट्र को एकजुट रखने के उद्देश्य से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हुई। भारत के 25 प्रदेशों में समिति की शाखाएं आज भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी हैं। इसी प्रकार 1893 में बाबू श्याम सुंदर दास द्वारा स्थापित काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने भी हिंदी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि की उन्नति और प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाई है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हिंदी भाषा और साहित्य के निर्माण तथा प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से अनेक सरकारी और स्वैक्षिक संस्थाओं की स्थापना हुई है। केंद्र सरकार के अधीन काम करने वाली - केंद्रीय साहित्य अकादमी, केंद्रीय हिंदी निदेशालय और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा महत्वपूर्ण संस्थान हैं। साहित्य अकादमी हिंदी के उच्च स्तरीय साहित्य के निर्माण और अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे गए श्रेष्ठ साहित्य के हिंदी में अनुवाद तथा भारत सरकार की भाषा नीति बनाने में सहायता करती है।

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत साहित्यकारों की साहित्य जगत में बड़ी प्रतिष्ठा है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय की देवनागरी लिपि के मानकीकरण, राजभाषा सम्बंधी कार्यों के संवर्धन और तकनीकी शब्दों के निर्माण में महती भूमिका है। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा देश और विदेश के विद्यार्थियों को हिंदी के शिक्षण, अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित है। संस्थान ने बहु भाषा शब्दकोशों का निर्माण कर हिंदी और अहिंदी भाषी दोनों प्रकार के लोगों के लिए परस्पर भाषाई पठन-पाठन सम्भव और सरल कर दिया है। प्रादेशिक हिंदी साहित्य अकादमियां भी हिंदी भाषा और साहित्य के संवर्धन के कार्य में लगी हुई हैं।

हिंदी भाषा और साहित्य के निर्माता साहित्यकार, जिनके बिना आधुनिक हिंदी साहित्य की चर्चा पूरी नहीं होती है उनमें छायावाद (1920-1935) के चारों स्तम्भों, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और महादेवी के साहित्य को शास्त्रीय साहित्य की श्रेणी में रखा जाता है। प्रेमचंद हिंदी भाषा के इतिहास में लोकप्रियता का कीर्तिमान स्थापित करने वाले साहित्यकार हुए हैं।

20वीं सदी के उत्तरार्ध में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, जैनेंद्र कुमार, हजारी प्रसाद द्विवेदी, विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा, कुबेरनाथ राय, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, नागार्जुन, कुंवर नारायण, विद्या निवास मिश्र, वासुदेव शरण अग्रवाल, नरेंद्र कोहली और कमल किशोर गोयनका जैसे साहित्यकार कालजयी साहित्य की रचना कर हिंदी भाषा और साहित्य के इतिहास में अमर हो गए हैं।

20वीं सदी का उत्तरार्ध हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की दृष्टि से भी स्वर्ण काल था। धर्मवीर भारती के सम्पादन में 'धर्मयुग', मनोहर श्याम जोशी के सम्पादन में 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', राजेंद्र अवस्थी के सम्पादन में 'कादम्बिनी', गिरिजा शंकर तिवारी के सम्पादन में 'नवनीत', अज्ञेय के सम्पादन में 'दिनमान', कमलेश्वर के सम्पादन में 'सारिका', लक्ष्मीमल सिंघवी के सम्पादन में निकलने वाली 'साहित्य अमृत' पत्रिका की हिंदी जगत में धूम थी। उन दिनों दैनिक पत्रों के रविवारीय अंकों में भी खूब साहित्य प्रकाशित होता था।

●●●

स्वदेशी अपनाएं विदेशी नहीं

स्वबोध

भारतीय जायके की महक विदेशों में भी फैल रही है, लेकिन स्वदेशी भोजन का स्वाद युवाओं को अटपटा क्यों लग रहे है? भारतीय प्राकृतिक सौंदर्य सहज ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है, किंतु अपने स्टेटस सिम्बल के कारण लोग विदेशों की सैर कर रहे हैं।

डॉ. हिमांशु थपलियाल

हिंदी दिवस 14 सितंबर को सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाया जाता है। भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को सरकार के कामकाज की भाषा इसी दिन स्वीकार किया गया था। यही कारण है प्रतिवर्ष इस दिवस को बड़े धूमधाम से मनाया जाता है, परंतु अधिकतर देखा जाता है कि हिंदी दिवस के दिन हिंदी के बड़े-बड़े बैनर लगाने वाले लोग ही अधिकांश अपने अन्य कार्यों के लिए विदेशी भाषाओं विशेष रूप से अंग्रेजी का उपयोग करते हुए देखे जाते हैं। जो नहीं भी करते हैं वह अपने बच्चों को विदेशी भाषा पढ़ाकर उसके माध्यम से करियर बनाने के लिए विचारशील होते हैं। ऐसे अधिकांश लोगों के लिए हिंदी दिवस जैसे कार्यक्रम मात्र एक औपचारिकता बनकर रह गए, जिसे केवल एक उत्सव की तरह मना लेते हैं।

ऐसी ही औपचारिकता किसी प्रदेश का दिवस या किसी अन्य त्योहार को मनाने में भी देखी जाती है। चाहे स्थानीय भाषाओं के उपयोग की बात हो, चाहे स्वदेशी सामग्री के उपयोग की बात हो, चाहे घूमने के लिए स्थान के चयन की बात हो और चाहे सुनने के लिए संगीत की बात हो, लोग इनकी बातें तो करते हैं, किंतु खुद को कूल दिखाने के लिए विदेशी ब्रांड के कसीदे भी पढ़ते हुए दिखाई देते हैं। कुछ लोग घूमने के लिए विदेशों में जाना पसंद करते हैं ताकि अपने स्टेटस को लोगों को दिखा सकें। संगीत के मामले में भी कई बार विदेशी संगीत

को भी लोग अधिकतर इन्हीं कारणों से महत्व देते दिखते हैं। भोजन के मामले में तो आज सभी जानते हैं कि किस तरह से विदेशी भोजन के प्रभाव में कई सारे पारम्परिक व्यंजन का स्वाद युवाओं को अटपटे लग रहे हैं।

अब बात आती है कि इन सभी चीजों का समाधान क्या है? वर्तमान में जो वैश्विक शक्तियों के सबसे प्रमुख हथियार के बारे में विश्लेषण किया जाता है तो आत्मनिर्भरता एवं स्वदेशी ही दो सबसे बड़े हथियार हैं जिन्होंने सभी मजबूत राष्ट्रों की नींव रखी है। आज यदि हम अपने देश को वास्तव में मजबूत बनाना चाहते हैं तो हमें स्वदेशी के मार्ग पर चलना होगा। यह स्वदेशी शब्दावली केवल वस्तुओं के उपभोग तक सीमित नहीं है बल्कि इससे आगे बढ़कर जीवनशैली में स्वदेशी को समाहित कर देना है।

आज हिंदी दिवस को यदि हम स्वदेशी के दृष्टिकोण से देखें तो अधिकांश भारतीय भाषाएं हिंदी की ही स्रोत भाषाओं से निकली हुई हैं ऐसी स्थिति में भारतीयों का दायित्व यह है कि वे हिंदी का उपयोग तो करें ही, पर साथ ही साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी ज्ञान अर्जित करें और जब भी हिंदी से इतर अन्य भाषा के उपयोग की बात आती है तो विदेशी आंग्लभाषा की बजाय अन्य भारतीय भाषाओं का उपयोग करें। इसके पीछे केवल यह एकमात्र कारण नहीं है कि वे भारतीय हैं केवल इसलिए उपयोग करें बल्कि इसका मुख्य कारण उन भाषाओं का समृद्ध शब्दकोश और हमारी संस्कृति के मूल तत्वों का उनमें समावेश होना है।

ऐसे ही भजन, गीत, संगीत के पाश्चात्यीकरण की प्रवृत्ति को समाप्त करने की आवश्यकता है जिसका मूल केवल शो-ऑफ करना और खुद को विदेशी भाषाओं का पारंगत दिखा कर गौरवान्वित अनुभव करना है। हमें यह समझना होगा कि हमारे गीत-संगीत का ज्ञान भगवान शिव के डमरू की ध्वनि से लेकर विभिन्न शास्त्रीय विधाओं के द्वारा यहां के संगीत घरानों के माध्यम से जन-जन तक जुड़ा रहा है। संगीत की परम्परा इतनी समृद्ध है कि इनमें मौसम, समय या परिस्थितियों के अनुरूप भी अनेक राग सुनने को मिलते हैं जो व्यक्ति की मानसिक थकान को दूर कर परमशांति और परमानंद देने में भी सक्षम होते हैं।

भोजन को देखा जाए तो आज जहां विश्व अब आर्गेनिक की ओर आ रहा है तो भारतीय बाजारों में पश्चिमी व्यंजनों एवं फास्टफूड को युवाओं के आकर्षण का केंद्र देखा जा सकता है, इसका मूल कारण पोषण की पूरी जानकारी न होना है। आज के युवाओं को भारत के स्वदेशी भोजन की परम्परा और उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव के बारे में ज्ञान न होने के कारण वे भारतीय व्यंजनों को अभी पहचान ही नहीं पाए हैं, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अलावा कई मेडिकल एजेंसीज ने भारतीय पकवानों और मोटे अनाज को एक वरदान माना है और पोषण का सर्वोत्तम माध्यम स्वीकार किया है। आज उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक भारत में इतने पकवान, भोजन एवं अन्य पोषक खाद्य सामग्रियां पाई जाती हैं जो दुनिया के किसी भी देश में होना सम्भव ही नहीं है।

आज भारतीयों को केवल आकर्षण के कारण विदेश न जाकर अपने देश के विभिन्न हिस्सों में अपनी छुट्टियां मनाने जाना चाहिए ताकि इस देश के सुंदर स्थलों को देख सकें। इससे न केवल स्वदेशी पर्यटन केंद्र विकसित होंगे बल्कि एक नई अर्थव्यवस्था भी पैदा होगी। भारत देश में पहाड़ से लेकर समुद्र तक और घने जंगलों से लेकर रेगिस्तान तक सब कुछ उपलब्ध हैं। अब आवश्यकता है भारतवासियों को अपने देश को एक्सप्लोर करने की। इसलिए विदेश का मोह छोड़कर देशी पर्यटन केंद्रों पर जाकर आनंदित होने के साथ ही अपनी संस्कृति के विस्तार पर भी गौरवान्वित हों।

आज हम सभी को यह समझने की आवश्यकता है कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में हमें अब दिखावे के लिए विदेशों की ओर आकर्षित होने की बजाय अपने देश के विराट स्वरूप में समाई हुई विभिन्न भाषाओं-बोलियों को जानना, सीखना और उपयोग करके उनका संरक्षण करना है। विदेशी पिज्जा-बर्गर जैसी चीजों का मोह छोड़ अपने देश के स्वास्थ्यवर्धक भोजन/पकवानों को जानकर उनको प्रचारित-प्रसारित भी करना है ताकि स्वाद के साथ-साथ देश की स्वास्थ्य रक्षा भी हो सके।

विज्ञापनों के द्वारा प्रचारित किसी विदेशी स्थल पर घूमने के बजाय अपने देश के प्रत्येक राज्य में स्थित सुंदर व रमणीय स्थलों पर जाएं और अपने देश की कला-संस्कृति की बारीकियों का अनुभव करें। गीत-संगीत की दुनिया में भारत के अनेक राज्यों में अलग-अलग अनूठे नृत्य संगीत और वाद्य यंत्रों की आनंदित करने वाली धुनों का आनंद लेते हुए भारत की महान विरासत में अपने सहअस्तित्व के भाव का भी अनुभव करें।

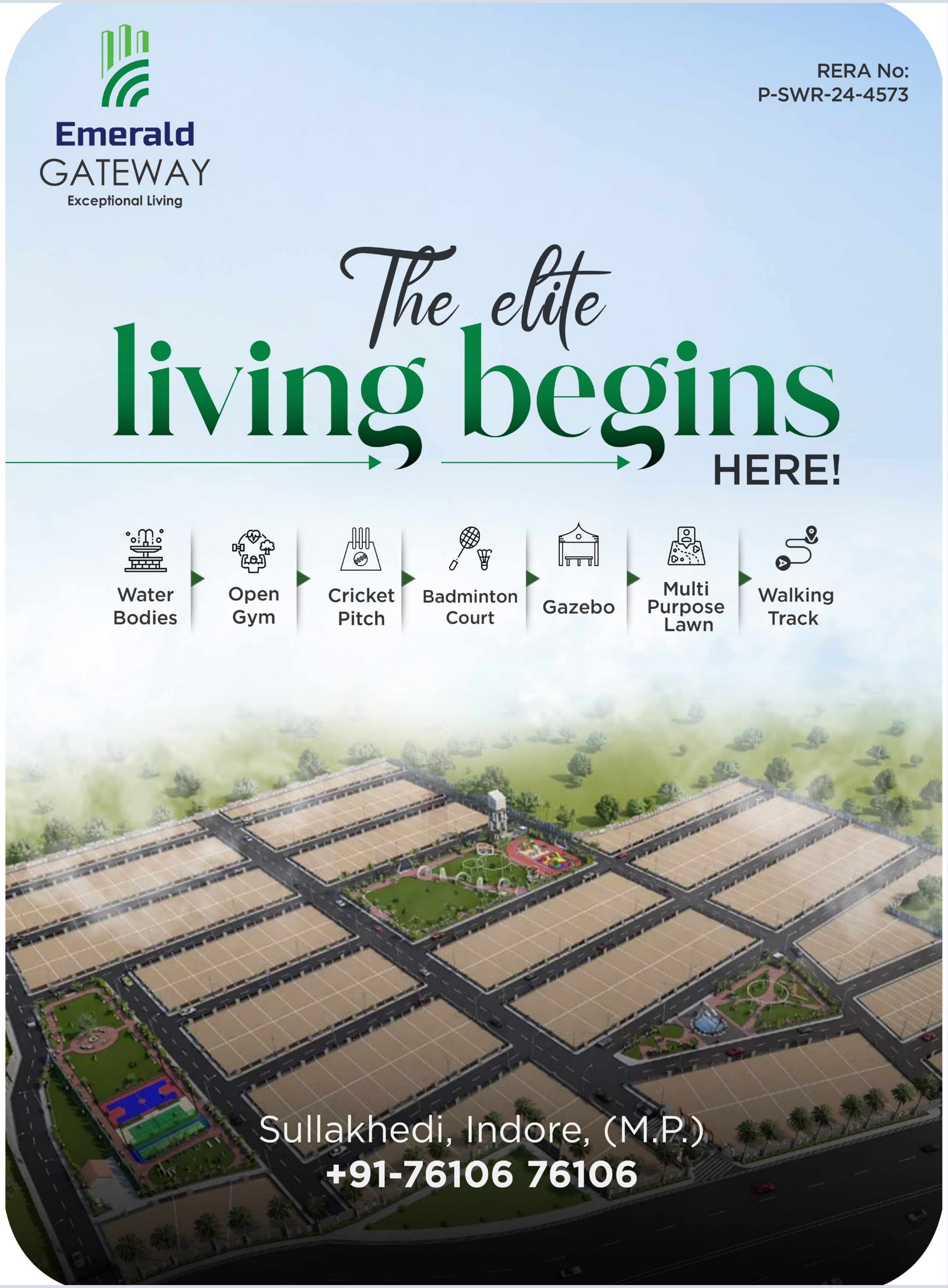
Emerald
GATEWAY
Exceptional Living
RERA No:
P-SWR-24-4573
The elite
living begins
HERE!
Water Bodies
Open Gym
Cricket Pitch
Badminton Court
Gazebo
Multi Purpose Lawn
Walking Track
Sullakhedi, Indore, (M.P.)
+91-76106 76106

हिंदी का प्रचार-प्रसार केवल हिंदुस्थान में नहीं है बल्कि वैश्विक पटल पर भी हिंदी पढ़ी और पढ़ाई जाती है। यहां तक कि जापान में 7 रेडियो चैनल हैं जो हिंदी का प्रसारण करते हैं। हिंदी साहित्य अकादमी (मॉरीशस) से वसंत तथा रिमझिम जैसी पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। कनाडा में ब्रिटिश कोलंबिया, यॉर्क और कालगरी विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन केंद्र हैं।

वैश्विक मंच पर हिंदी की पहचान

‘आम’ कहो तो रस टपक पड़े,
‘मैंगो’ में वैसा स्वाद कहां जमे?
जुबान वही जो दिल से निकले,
जिससे ममता की नदियां बहें।
जिसमें मां की लोरी गूंजे,
जिसमें बचपन की यादें रहें।
देश-देशांतर पहुंच गई है,
हिंदी की ज्योति कभी न बुझे।
परदेशी भी जब बोल उठे,
भारत की धड़कन हिंदी खूब सजे।
हिंदी न केवल भाषा, बल्कि आत्मा है,
धरती-गगन की आशा है।
जहां-जहां भारतवासी जाएं,
हिंदी का दीपक वहां जलाएं।

वैसे ही हिंदी हमारी मिट्टी, हमारी जड़ों और हमारी आत्मा से गहराई से जुड़ी हुई है। हिंदी आज केवल भारत की ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की धड़कन बन रही है। यह भाषा प्रवासी भारतीयों के माध्यम से सीमाओं को पार कर अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों तक फैल चुकी है। हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत में लगभग 60 करोड़ लोग इसे बोलते हैं और विश्व स्तर पर यह संख्या 70 करोड़ से अधिक है। लगभग 132 देशों में बसे भारतीय समुदाय हिंदी का प्रयोग करते हैं। हिंदी केवल भारत की बोली नहीं है, यह अब अंतरराष्ट्रीय सम्पर्क की भाषा के रूप में उभर रही है।

दीपक द्विवेदी

हिंदी का भौगोलिक विस्तार अत्यंत व्यापक है। यह भाषा एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका तक पहुंच चुकी है। अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों में बसे भारतीय न केवल इसे बोलते हैं बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी सिखा रहे हैं। नेपाल में लगभग 8 मिलियन, अमेरिका में 8.6 लाख, कनाडा में 1.53 लाख, मॉरीशस में 4.5 लाख, फिजी में 3.8 लाख, दक्षिण अफ्रीका में 2.5 लाख, सूरीनाम में 1.5 लाख और सिंगापुर की कुल जनसंख्या का 1.2% लोग हिंदी बोलते हैं। यह आंकड़े बताते हैं कि हिंदी की उपस्थिति विश्वभर में लगातार सुदृढ़ हो रही है।

हिंदी को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करने में शिक्षा संस्थानों और संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अमेरिका में कोलम्बिया विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो और यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास जैसे संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है। कनाडा में ब्रिटिश कोलंबिया, यॉर्क और कालगरी विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन केंद्र हैं। जापान में 1908 से ही हिंदी का अध्ययन आरम्भ हो चुका था और आज वहां 7 रेडियो चैनल हिंदी प्रसारण करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई संस्थाएं हिंदी के प्रसार में सक्रिय हैं, जैसे मॉरीशस हिंदी संस्थान, विश्व हिंदी सचिवालय, हिंदी सोसायटी (सिंगापुर), हिंदी परिषद (नीदरलैंड्स) और अंतरराष्ट्रीय हिंदी

समिति (अमेरिका)। मॉरीशस में हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना 1996 में हुई और वहां से वसंत तथा रिमझिम जैसी पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। हिंदी केवल शब्दों का समूह नहीं, यह भारतीय संस्कृति का वाहक है। जहां भी हिंदी पहुंचती है, वहां भारतीय जीवन-पद्धति, त्यौहार और लोक-संस्कृति भी पहुंचते हैं।

टोरंटो और दुबई में दीवाली मेला और कवि सम्मेलन आयोजित होते हैं। ब्रिटेन में कविता मंच और अमेरिका में विश्व हिंदी सम्मेलन ने हिंदी की सांस्कृतिक उपस्थिति को मजबूती दी है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी साहित्य और भारतीय महाकाव्यों का प्रभाव दिखाई देता है। रामायण के 300 से अधिक रूपांतर विभिन्न देशों में मिलते हैं-बर्मा का रामवत्थु, लाओस का रामजातक, कम्पूचिया का रामकेर्ति, इंडोनेशिया का रामायण काकावीन, मलेशिया का हिकायत सेरीराम, चीन का अनामकं जातकम् और जापान का होबुत्सुशू। यह तथ्य दर्शाता है कि हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति ने कितनी गहराई से विश्व सभ्यता को प्रभावित किया है।

हिंदी साहित्य को वैश्विक पहचान दिलाने में अनेक विद्वानों और लेखकों का योगदान है। जॉर्ज ग्रियर्सन ने तुलसीदास को बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा। कर्नल टॉड और डॉ. बूल्हर ने पृथ्वीराज रासो की प्रमाणिकता पर गहन अध्ययन किया। आल्हाखंड को प्रकाशित करवाने का श्रेय चार्ल्स इलियट को जाता है। फादर कामिल बुल्के ने भी हिंदी साहित्य को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभाई। हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की अद्भुत क्षमता है। आज इसमें डच, ईरानी, अंग्रेजी, पश्तो, तुर्की, रूसी, जापानी, पुर्तगाली और चीनी शब्द तक सम्मिलित हो चुके हैं। यह बहुलता हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करती है।

हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं बल्कि भारत की आत्मा है। यह भाषा लोकगीतों की मिठास, भक्ति की गहराई और आधुनिकता का विस्तार एक साथ समेटे हुए हैं। हिंदी आज विश्व के कोने-कोने में पहुंच चुकी है, पर इसका वास्तविक गौरव तभी सम्भव होगा जब भारतवासी स्वयं इसे आत्मगौरव से अपनाएं और देश की अन्य भाषाओं को भी बराबरी का स्थान दें। भाषाई विविधता में एकता का आदर्श प्रस्तुत करके ही भारत हिंदी को वह वैश्विक पहचान दिला सकता है जिसका वह अधिकारी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

पहले कम्प्यूटर और स्मार्ट फोन पर काम करना अंग्रेजी के जानकारों के लिए आसान था, पर कृत्रिम बुद्धि ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर सुलभ बना दिया है। यहां तक कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग और सी-डैक द्वारा एक ऐप विकसित किया गया है जिससे मोबाइल पर हिंदी भाषा सीखना सरल हो गया है।

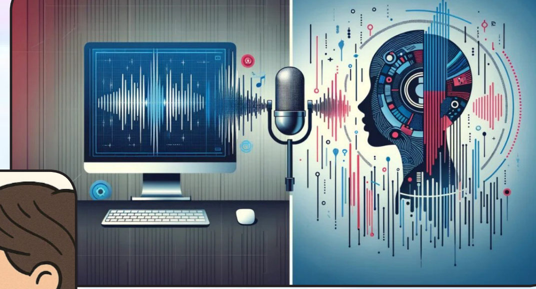

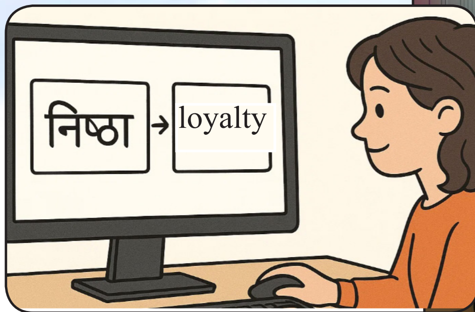

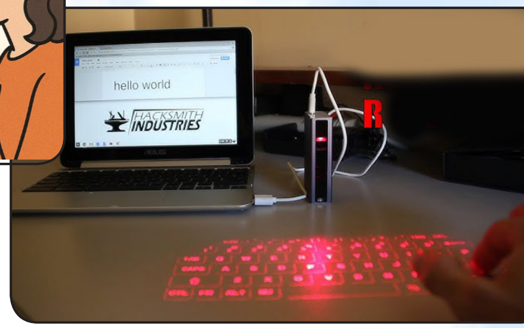

तकनीक

कृत्रिम बुद्धि से विस्तृत होती हिंदी

निरंतर विकास के लिए भाषा का जीवंत प्रवाह आवश्यक है अर्थात उसमें नए शब्द गढ़े जाएं, वह नए शब्दों को आत्मसात करे, जन सामान्य की समझ के लिए उसका सरलीकरण हो, उसके साहित्य का अन्य भाषाओं में अनुवाद हों और वो प्रकाशन, प्रसारण की नवीकृत होती यांत्रिक पद्धति के अनुरूप ढलती जाए।

वर्तमान समय कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन और इंटरनेट आधारित ऐसी यांत्रिकी का है जो सम्पूर्ण विश्व को एक छोटे से स्क्रीन में समेट देती है। एक समय में दुष्कर लगने वाले कार्य आज कृत्रिम बुद्धि के माध्यम से सहज हो गए हैं। कृत्रिम बुद्धि ने भाषाओं के प्रसार और विकास को भी नई गति और नया स्वरुप दिया है, इसलिए स्वाभाविक रूप से हिंदी भी इससे अछूती नहीं है। कृत्रिम बुद्धि ने हिंदी को भी समयानुकूल विस्तार लेने में पर्याप्त सहयोग प्रदान किया है।

मात्र ढाई-तीन दशक पूर्व जब कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ा तो उसके लिए हिंदी फॉन्ट्स का विकास हुआ, उस समय कम्प्यूटर पर हिंदी टाइप कर पाना अपने आप में एक विशेष कौशल था, जिसे कुछ ही लोग कर पाते थे। आज हमारे पास कम्प्यूटर से लेकर स्मार्ट फोन तक सभी जगह कृत्रिम बुद्धि जनित यूनिकोड फॉण्ट, वर्चुअल कीबोर्ड और लिप्यान्तरण की सुविधा के साथ-साथ मात्र बोलकर अपनी बात, अपनी भाषा में लिखवा देने की सुविधा है, जिसने मात्र हमारे निजी और व्यावसायिक जीवन को ही सरल नहीं बनाया वरन हमारी भाषा को भी अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

मीनाक्षी दीक्षित

हिंदी भाषा के विकास, प्रसार, उपयोग में वृद्धि आदि पर कृत्रिम बुद्धि के जिस व्यापक प्रभाव को आज अनुभव किया जा रहा है, वह प्रभाव उतना ही दूरगामी भी है। हिंदी भाषा के साथ कृत्रिम बुद्धि के अनुप्रयोग हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के साथ-साथ इसके उपयोग, संरक्षण और विकास के नए आयाम भी खोल रहे हैं। उदाहरण के रूप में कृत्रिम बुद्धि आधारित अनुवाद उपकरणों (जैसे गूगल ट्रांसलेट) और वॉयस असिस्टेंट (जैसे एलेक्सा और सिरी) ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर सुलभ बना दिया है। कृत्रिम बुद्धि के माध्यम से स्वचालित हिंदी सामग्री (ब्लॉग, समाचार, कहानियां) तैयार की जा रही हैं, जिससे डिजिटल मंचों पर हिंदी का प्रचार बढ़ रहा है। लिप्यांतरण की सुविधा ने रोमन, देवनागरी और अन्य लिपियों के मध्य पारस्परिक परिवर्तन को सरल बना दिया है जिससे हिंदी भाषियों का देवनागरी न जानने वालों के साथ संवाद करना सहज हो गया है।

कृत्रिम बुद्धि हिंदी की पुस्तकों का अनुवाद करने और व्याकरण सिखाने में सहायता कर रही है, जिससे छात्र विश्व के किसी भी कोने में बैठकर हिंदी सीख सकते हैं, उनकी समझ बेहतर हो रही है। कृत्रिम बुद्धि अब हिंदी वॉयस कमांड को

पहचानकर उपकरणों के साथ संवाद को सरल बना रही है। हिंदी भाषा आधारित चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट उपभोक्ताओं को स्थानीय सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। सोशल मीडिया और ग्राहक फीडबैक के लिए कृत्रिम बुद्धि हिंदी भाषियों के भावों का विश्लेषण करने में सहायक है। कृत्रिम बुद्धि किसी भी भाषा की फिल्मों और वेब सीरीज को हिंदी में डब करने और सबटाइटल जोड़ने का काम तेजी से कर देती है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय भाषाएं नि:शुल्क सीखने हेतु 'भाषा संगम' मोबाइल एप विकसित किया है। इसमें कृत्रिम बुद्धि के आधार पर अनुवाद, उच्चारण, शब्दकोश आदि जानकारी मिलेगी। इस एप के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं में दैनिक उपयोग के सामान्य वाक्य सीखने का अवसर प्राप्त होगा। भाषा संगम द्वारा विभिन्न भाषा-भाषी लोग आपसी बातचीत और सम्पर्क के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को समझ सकेंगे। राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक सम्बंध सुदृढ़ हो जाएंगे। इसी प्रकार भारत सरकार के राजभाषा विभाग और सी-डैक द्वारा विकसित लीला राजभाषा ऐप से अब भारतीय भाषाओं का उपयोग सहज हुआ है। लीला-राजभाषा कृत्रिम बुद्धि के माध्यम से भारतीय भाषाओं को सीखने की ऐप है। हिंदी सीखने के लिए एक बहु-मीडिया आधारित बुद्धिमान स्व-शिक्षण ऐप है। लीला (लर्न इंडियन लैंग्वेजेस थ्रू आर्टिफिशल इंटेलिजेंस) का उपयोग करके अपने मोबाइल पर हिंदी भाषा सीखना आनंददायक और सरल है।

निकट भविष्य में कृत्रिम बुद्धि का उपयोग ग्रामीण तथा अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी बहुभाषी डिजिटल सेवाओं की पहुंच बढ़ाकर समावेशिता को प्रोत्साहित करेगा। साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं के प्रमुख और लोकप्रिय शब्दों को हिंदी में जोड़कर आधुनिक हिंदी की शब्दावली को भी विकसित करेगा, ऐसा अनुमान है। इसमें एक चुनौती हिंदी भाषा की अपनी बोलियों की विविधता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखने की आ सकती है।

कृत्रिम बुद्धि के अनुप्रयोगों के माध्यम से हिंदी भाषा का विकास हिंदी भाषियों, विद्वानों, साहित्यकारों, व्याकरणविदों आदि के लिए नए उत्तरदायित्व भी लेकर आया है जिसमें हिंदी भाषा के मूल स्वाभाव को अक्षुण्ण बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

● ● ●

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

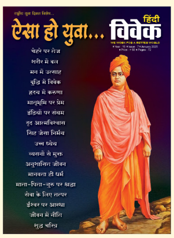

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

इंटरनेट

हिंदी का बढ़ता दायरा

हिंदी अपने डिजिटल स्वरूप के बल पर इंटरनेट और सोशल मीडिया पर विश्व में सरल रूप में उपलब्ध हो गई है। यहां तक कि अमेजन, फिल्पकार्ट, जोमैटो में भी अब हिंदी यूजर इंटरफेस उपलब्ध हैं। रोबोटिक्स, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और चैट जीपीटी जैसे कई दूसरे वर्चुअल असिसटेंट में भी हिंदी के उपयोग शामिल हो गए हैं।

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

आज विश्व में इंटरनेट पर निर्भर लगभग 200 सोशल नेटवर्किंग साइटें हैं जिनमें फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, फ्लिकर, आरकुट, माई स्पेस कुछ सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। इन सभी साइटों का उपयोग विश्व स्तर पर सामाजिक सम्बंधों को बनाने के लिए मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकियों के प्रयोग के आधार पर किया जा रहा है।

अलग-अलग स्रोतों से प्राप्त आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत दुनिया में सबसे अधिक फेसबुक और वाट्सऐप उपयोगकर्ताओं का देश है। यहां लगभग 38 करोड़ लोग फेसबुक पर सक्रिय हैं, वहीं स्टेटिस्टा के अनुसार इस वर्ष 2025 के अंत तक भारत में चैटिंग और मैसेजिंग के लिए व्हाट्सएप उपयोगकर्ताओं की संख्या 50 करोड़ से अधिक पहुंच सकती है। वहीं देश में यूट्यूब उपयोगकर्ताओं की संख्या भी लगभग 49.1 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। दूरसंचार विभाग की ताजा रिपोर्ट के अनुसार जून 2025 तक 5जी सम्पन्न भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 100 करोड़ से अधिक हो चुकी है।

इंटरनेटयुग के इन सबसे सक्रिय भारतीयों ने प्रायः सभी लोकप्रिय सोशल मीडिया साइटों पर उपयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं में अपनी हिंदी को भी प्रमुख स्थान दिलवाया है। इस समय भारत में सोशल मीडिया में हिंदी बहुत ही

लोकप्रिय भाषा है। स्मार्ट फोनों पर चलने वाली वाट्सऐप मैसेंजर तत्क्षण मेसेजिंग सेवा में हिंदी ने धूम मचा रखी है। आंकड़ों के अनुसार यूट्यूब ने हिंदी भाषी राज्यों में पारम्परिक टेलीविजन को पीछे छोड़ दिया है। हिंदी के संदर्भ में एक और सुखद तथ्य यह सामने आया है कि भारत में हिंदी वॉयस सर्च क्वेरी में प्रतिवर्ष 400 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हो रही है।

हालांकि हिंदी वह भाषा है, जिसे सदैव अपने अस्तित्व और वर्चस्व के लिए संघर्ष करना पड़ा है, बावजूद इसके कि वह एक सशक्त वैज्ञानिक भाषा है। वैदिक संस्कृत से उद्भवित और क्रमशः पाली, मागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, पैशाची, ब्राचड तथा अर्धमागधी प्राकृतभाषा स्वरुपों से अपभंशित होती हुई आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक के रूप में हिंदी के प्रादुर्भाव का इतिहास विकास से भरा पड़ा है। विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक हिंदी आकृति या रूप के आधार पर वियोगात्मक या विश्लिष्ट भाषा कही गई है। हिंदी भाषा की गत्यात्मकता और समयानुकूल बदलते रहने की स्वाभाविक वैज्ञानिक प्रकृति ने इसे विश्व की श्रेष्ठतम भाषा होने का सामर्थ्य प्रदान किया है।

आज दुनिया के 206 देशों में विस्तारित हिंदी को 1 अरब 30 करोड़ प्रयोक्ताओं ने वैश्विक स्वरुप प्रदान कर दिया है। वर्तमान इंटरनेट युग में हिंदी उच्चतर प्रौद्योगिकी, राजनयिक सम्बंध, वाणिज्य-व्यापार, सामुद्रिक यातायात एवं आधुनिक मानव-जीवन के अन्य अनेक प्रभागों में एक प्रयोजनपरक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होती जा रही है।

इंटरनेट युग में विश्व मानव की बदलती चिंतनात्मकता तथा नवीन जीवन स्थितियों को स्वयं में व्यंजित करते हुए हिंदी का एक बिल्कुल अलग ही तकनीकी स्वरुप उभरकर सामने आया है। यद्यपि इस दिशा में अभी अनेक बौद्धिक और सुनियोजित विशेषज्ञताएं अपेक्षणीय हैं, फिर भी कम्प्यूटीकृत से लेकर मोबाइलमयी हिंदी ने भारत ही नहीं वरन् विदेशों में भी लोकमानस को आकृष्ट किया है। हिंदी के इस डिजिटल स्वरूप का एक समृद्ध इतिहास है, जो इसके वर्चस्व स्थापना के संघर्ष की कहानी कहता है।

विश्व स्तर पर सन् 1995 के आसपास इंटरनेट पर हिंदी के शुभारम्भ से लीप ऑफिस, श्रीलिपि तथा अक्षर फॉर विंडोज़ आदि वर्डप्रोसैसरों की शुरुआत हुई, जिसके फलस्वरुप कम्प्यूटरों पर हिंदी में काम करना आसान होने लगा। वर्ष 2000 में हिंदी समाचार पत्रों में इंटरनेटी हिंदी के आगमन के साथ विंडोज़ 2000 और माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के दक्षिण एशियाई संस्करण में हिंदी को समर्थन मिला। इसके बाद सन् 2002 में लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम और अन्य प्रोग्रामों में हिंदीकरण शुरु हुआ।

इंटरनेट पर हिंदी की यात्रा रोमन लिपि से प्रारम्भ हुई थी, किंतु फोंट जैसी समस्याओं से जूझते हुए धीरे-धीरे हिंदी अब यूनीकोड फोंटों द्वारा अपनी विशुद्ध देवनागरी लिपि के स्वरुप में कम्प्यूटर पर प्रयोग की जाने लगी है। यूनीकोड, मंगल जैसे यूनीवर्सल फोंटों ने देवनागरी लिपि को कम्प्यूटर पर नया जीवन प्रदान किया। इंटरनेट पर हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने में ब्लॉगिंग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्ष 2003 में जब हिंदी भाषा का पहला ब्लॉग आलोक कुमार नाम के एक तकनीकी विशेषज्ञ ने बनाया था, तब से अब तक इन ब्लॉगों की संख्या 1 लाख से ऊपर पहुंच चुकी है। इन ब्लॉगों में से 15-20 हजार को सक्रिय और 5 से 6 हजार को अतिसक्रिय की श्रेणी में रखा जा सकता है।

वर्ष 2003 में हिंदी विकिपीडिया आया और 2005 में माइक्रोसॉफ्ट ऍक्सपी ऑपरेटिंग सिस्टम का एक विशिष्ट हिंदी का स्टार्टर संस्करण जारी हुआ। 2006 में माइक्रोसॉफ्ट, ऍमऍसऍन और याहू हिंदी में आरम्भ हुए। इसी तरह मार्च 2007 में गूगल समाचार सेवा हिंदी में शुरु की गई। 2011 में भारतीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने हिंदी शब्दावलियां ऑनलाइन शुरु कीं। 14 सितम्बर 2011 को हिंदी दिवस के दिन वर्तमान में एक्स नाम से प्रचलित ट्विटर सेवा की हिंदी में शुरुआत हुई। वर्ष 2014 से गूगल द्वारा हिंदी में मानचित्र देखना, बोलकर खोजने की सुविधा हिंदी वॉयस-सर्च, इंडियन लैंग्वेज इंटरनेट अलायंस, हिंदी विज्ञापन, गूगल डॉक्स की ओसीआर सुविधा में हिंदी भाषा को शामिल करना और बोलकर हिंदी टाइप करना जैसी अनेक महत्वपूर्ण हिंदी सेवाएं इंटरनेट पर प्रारम्भ की गई। ऐसे अनेक अनवरत प्रयासों ने हिंदी को नए तकनीकी और वैज्ञानिक आयाम दिए हैं। यही कारण है कि आज हर सामान्य भारतीय हिंदी के लिए तैयार किए गए विभिन्न सॉफ्टवेयरों के कारण कम्प्यूटर से लेकर मोबाइल तक हिंदी के प्रयोग में स्वयं को सहज अनुभव करने लगा है।

योगदान

हिंदी और युवाओं की भूमिका

अन्य भाषाओं के बढ़ते प्रयोग के बीच हिंदी को और भी समृद्ध बनाने, अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। भाषा हो या संस्कृति एक लम्बे समय के बाद वट वृक्ष का रूप लेता है। युवा जब अपनी भाषा की जड़ों को समझेंगे तो ही वे अगली पीढ़ी तक पहुंचाएंगे।

मां, मातृभूमि और मातृभाषा मानव जीवन के अस्तित्व के मूलाधार हैं। मां हमें जीवन देती हैं, हमारा पालन-पोषण करती हैं और निस्वार्थ प्रेम करती हैं। मातृभूमि वह पावन धरा है, जहां हम जन्म लेते हैं और बड़े होते हैं। आश्रय से लेकर पहचान जैसे महत्वपूर्ण पहलू मातृभूमि से ही सम्बद्ध हैं। वहीं मातृभाषा हमारी सांस्कृतिक जड़ों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ यह हमें अपनी धरोहर और इतिहास से भी जोड़ती है। ये तीनों मिलकर हमारे अस्तित्व और पहचान का निर्माण करते हैं। ये तीनों नैसर्गिक रूप से हमारे जीवन और संस्कारों को पोषित करते हैं। इसीलिए प्रायः कहा जाता है कि मां, मातृभूमि और मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं हो सकता।

मातृभाषा हमारे संस्कार का एक बहुउपयोगी साधन है। मातृभाषा के प्रति सम्मान एवं श्रद्धा ज्ञापित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा जैसे कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित किए जाते हैं। इन आयोजनों का सर्वोपरि उद्देश्य यही है कि अन्य भाषाओं के बढ़ते प्रभाव के बीच हम हिंदी भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करते हुए इसे तो निरंतर समृद्ध करें ही, स्वयं भी समृद्ध हों। इस दिशा में भारत का युवा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत, विश्व का सबसे युवा राष्ट्र है। विश्व की 65 प्रतिशत युवा जनसंख्या हमारे देश में निवास करती है। युवा जनसंख्या किसी भी भाषा और संस्कृति का भविष्य होती है। ऐसे में देश की इस ऊर्जावान जनसंख्या के कंधों पर हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने का एक बड़ा दायित्व है।

डॉ. रविंद्र सिह भड़वाल

आज लगभग हर युवा की डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर न्यूनाधिक उपस्थिति है। ये युवा हिंदी भाषा में सोशल मीडिया, ब्लॉग, पॉडकास्ट और ऑनलाइन कंटेंट क्रिएशन के माध्यम से हिंदी का उपयोग कर इसे वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बना सकते हैं। तकनीकी शब्दावली को हिंदी में अनुवाद कर या नए शब्दों का सृजन कर वे भाषा को आधुनिक बना सकते हैं। हिंदी में गेमिंग, कोडिंग और अन्य तकनीकी विषयों पर कंटेंट बनाकर वे इसे शिक्षा और मनोरंजन का महत्वपूर्ण माध्यम बना सकते हैं।

बहुत से युवा अंग्रेजी को आधुनिकता का प्रतीक मानते हैं और बोलचाल में हिंदी का कम उपयोग करते हैं। युवाओं को अपने दैनिक जीवन, मित्रों के साथ बातचीत और लेखन में यथासम्भव हिंदी का सही एवं प्रभावी ढंग से प्रयोग करना चाहिए। यह भाषा को जीवंत बनाए रखने में सहायता करेगा। साथ ही युवा पीढ़ी को हिंदी साहित्य पढ़ने और लिखने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। कविता, कहानी और उपन्यास लेखन से भाषा को नया आयाम मिलेगा।

युवाओं को उन सांस्कृतिक और साहित्यिक आयोजनों में भाग लेना चाहिए जहां हिंदी का

प्रयोग होता है। कवि सम्मेलन, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, नाटक मंचन और हिंदी दिवस जैसे कार्यक्रम भाषा के प्रति सम्मान और जागरूकता बढ़ाते हैं। इन आयोजनों के माध्यम से युवा अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़ते हैं और अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हैं।

उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बहुत कम है। युवाओं को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और वाणिज्य जैसे विषयों में हिंदी में अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा देना चाहिए। वैज्ञानिक लेखों, शोध पत्रों और पाठ्यपुस्तकों का हिंदी में अनुवाद कर वे ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह न केवल हिंदी को अकादमिक रूप से समृद्ध करेगा बल्कि यह सुनिश्चित करेगा कि ज्ञान समाज के सभी वर्गों तक पहुंचे।

हिंदी भाषा को लेकर एक समस्या अखरती है कि हिंदी भाषा में वर्तनी की बहुत सी अशुद्धियां होती हैं। उससे भी बड़ी चिंता है कि हम उसमें सुधार के लिए भी कुछ गम्भीर प्रयास नहीं करते हैं। युवाओं को यह समझना चाहिए कि हिंदी भाषा के शुद्ध स्वरूप का प्रयोग करना आवश्यक है। अनावश्यक रूप से अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के शब्दों को मिलाने से बचना चाहिए। अपनी भाषा पर गर्व करना और उसका सम्मान करना युवाओं की जिम्मेदारी है। यह तभी सम्भव होगा जब वे अपनी भाषा की जड़ों को समझेंगे और उसे भविष्य की पीढ़ी तक पहुंचाएंगे।

अतः हमें हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए और अधिक सजग होने की आवश्यकता है। विशेषकर युवा वर्ग के लिए हिंदी भाषा को केवल एक संवाद के माध्यम से आगे बढ़कर इसे अपनी पहचान और संस्कृति के एक अभिन्न अंग के रूप में देखना होगा। युवा जब हिंदी भाषा के प्रति अधिक जागरूक होगा, तो जहां एक ओर उनका संवाद अधिक प्रभावशाली होगा, वहीं उनकी अभिव्यक्ति में गहराई और आत्मविश्वास भी झलकेगा। हिंदी के प्रति सम्मान ज्ञापित करने हेतु केवल इसकी शुद्धता पर बल नहीं देना चाहिए बल्कि उसके प्रयोग को लेकर गर्व अनुभव करना होगा। इस तरह से युवा हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने और उसके प्रति सम्मान की भावना को बढ़ाने में योगदान दे सकते हैं।

●●●

श्री रामबिलास दामोदर मुंदडा (कोपरगांवकर) जी का स्वर्गवास

श्री रामबिलास दामोदर जी मुंदडा (कोपरगांवकर) का विगत दिवस स्वर्गवास हो गया। वे सर्वगुण सम्पन्न, मिलनसार, स्नेही, मुक्तहृदय और लोगों को अपना बना लेनेवाले असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। परिवार में बड़े होने के कारण घर की जिम्मेदारी कम आयु में ही इनके कंधों पर आ गई। अपनी लगन, निष्ठा और साहस के बल पर उन्होंने उन जिम्मेदारियों का निर्वहन किया।

परिवार में सभी को सहारा देना, छोटों से प्यार करना और बड़ों का सम्मान करना उनके व्यवहार में शामिल था। व्यवसाय में उन्होंने पूर्णनिष्ठा, अनुशासन और नवीन दृष्टिकोण का अद्भुत मेल साधा। इसीलिए वे एक सफल व्यवसायी के रूप में प्रसिद्ध हुए, परंतु केवल एक व्यवसायी ही नहीं बल्कि एक निस्वार्थ समाजसेवक, दानी व्यक्ति और लोकहित के लिए सदैव आगे रहने वाले सज्जन के रूप में उनकी वास्तविक पहचान बनी। समाज की कोई भी समस्या हो शैक्षणिक, धार्मिक या सामाजिक वे तत्परता से पहल करके सहयोग देते थे। जरूरतमंदों की सहायता के लिए आगे रहना, युवाओं को प्रोत्साहित करना और रिश्तों को निभाना उनके स्वभाव का अभिन्न अंग था। उनकी वाणी में मिठास, व्यवहार में सरलता और स्वभाव में उदारता होने के कारण समाज का हर वर्ग उन्हें अपना करीबी मानता था।

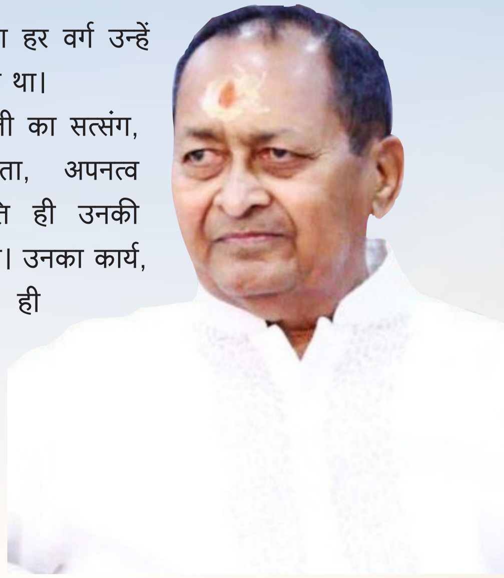

श्री रामबिलास जी का सत्संग, निष्ठा, समाजोन्मुखता, अपनत्व और उदार मनोवृत्ति ही उनकी वास्तविक सम्पत्ति थी। उनका कार्य, विचार और मूल्य ही आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायी धरोहर बने रहेंगे। उनके पदचिन्हों पर चलकर, उनके द्वारा निभाए गए मानवता, परम्परा और सेवा के मार्ग को आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति व सद्गति प्रदान करें। हिंदी विवेक परिवार की ओर से उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

●●●

न्याय की आस में हिंदी

गिरिजेश कुमार त्रिपाठी

जिस दिन उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय में भी भारतीय भाषाओं में कार्यवाही शुरू होगी, उसी दिन न्यायिक व्यवस्था सचमुच भारतीय समाज की आत्मा से जुड़ सकेगी। यह न केवल जनता की सुविधा का प्रश्न है बल्कि लोकतंत्र की पूर्णता का भी प्रश्न है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का लक्ष्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता भर नहीं था बल्कि यह भी था कि देश की आत्मा और संस्कृति अपनी ही भाषा में अभिव्यक्त हों। अंग्रेजी, शासन की भाषा थी, जिसने लम्बे समय तक भारतीय समाज को शासन और न्याय की प्रक्रिया से अलग-थलग रखा। स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद सबसे बड़ी चुनौती यही थी कि देश की विविध भाषाओं में कामकाज कैसे संचालित हों ताकि लोकतंत्र केवल एक औपचारिक संरचना न होकर जनता की वास्तविक भागीदारी का माध्यम बन सके। भाषा वही होती है जिससे जनमानस का सीधा संवाद हो। न्याय, प्रशासन और शिक्षा जैसे मूलभूत तंत्र यदि जनता की भाषा में न हों तो स्वतंत्रता अधूरी रह जाती है। इसी कारण संविधान निर्माताओं ने भारतीय भाषाओं को महत्व देते हुए उन्हें राजकाज और न्याय में स्थान दिलाने का प्रयास किया था, किंतु व्यावहारिक स्थिति में आज भी अंग्रेजी का वर्चस्व अनेक क्षेत्रों

में बना हुआ है।

संविधान के अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी को मान्यता दी गई, पर अनुच्छेद 348(1) के अंतर्गत यह प्रावधान किया गया कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों की कार्यवाहियां अंग्रेजी में होंगी। इस बीच अनुच्छेद 348(2) के रूप में एक रास्ता भी दिया गया, जिसमें कहा गया कि यदि कोई राज्य चाहे और राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त हो तो उच्च न्यायालय में हिंदी या राज्य की राजभाषा का प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार संवैधानिक ढांचे ने भारतीय भाषाओं को न्यायपालिका में अनदेखा नहीं किया, पर उन्हें स्थापित करने की प्रक्रिया को कठिन बना दिया। संसद को अधिकार दिया गया कि वह चाहे तो इस विषय पर कोई व्यापक कानून बना सके, किंतु अब तक इस दिशा में कोई निर्णायक कदम नहीं उठाया गया।

स्वतंत्रता के बाद से ही भारतीय भाषाओं को न्यायिक कार्यवाही में स्थान देने की मांग उठती रही है। उत्तर प्रदेश इस दिशा में अग्रणी रहा। 1950 के दशक से ही यहां पहल की गई और 1969 में राज्य सरकार ने एक अधिसूचना जारी की, जिसके अनुसार उच्च न्यायालय और अधीनस्थ न्यायालयों में याचिकाएं, प्रार्थना पत्र और वाद-पत्र हिंदी में प्रस्तुत किए जा सकते थे। इसके बाद 1970 के दशक में पारित उत्तर प्रदेश आधिकारिक भाषा अधिनियम के अंतर्गत हिंदी को प्रशासन और न्याय की भाषा बनाने का प्रावधान किया गया। परिणामतः अधीनस्थ न्यायालयों-जिला न्यायालयों और तहसील स्तर की न्यायालयों में हिंदी का व्यापक प्रयोग आरम्भ हुआ।

आज की स्थिति यह है कि अधीनस्थ न्यायालयों में अधिकांश कार्यवाही, गवाही, आदेश और निर्णय हिंदी में ही होते हैं, किंतु उच्च न्यायालयों का परिदृश्य जटिल है। यद्यपि उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों को राष्ट्रपति की अनुमति से हिंदी में कार्यवाही की स्वीकृति मिल चुकी है, परंतु व्यवहार में उच्च न्यायालयों में आदेश और निर्णय अधिकांशतः अंग्रेजी में ही लिखे जाते हैं। इसका एक बड़ा कारण यह है कि उच्च न्यायालयों के निर्णय सर्वोच्च न्यायालय तक जाते हैं, और वहां अंग्रेजी की अनिवार्यता बनी हुई है। यदि उच्च न्यायालय में निर्णय हिंदी में लिखे जाते हैं, तो सर्वोच्च न्यायालय के लिए अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है, जिससे समन्वय की समस्या उत्पन्न होती है। इसके अलावा कानूनी शब्दावली का अभाव, अधिवक्ताओं की अंग्रेजी में लम्बी परम्परा और न्यायाधीशों के प्रशिक्षण की कमी भी बड़ी बाधाएं हैं। हालांकि अनेक बार इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों ने व्यक्तिगत पहल पर हिंदी में निर्णय लिखे हैं। यह प्रयोग इस बात का प्रमाण है कि इच्छाशक्ति होने पर उच्च न्यायालय स्तर पर भी हिंदी में कामकाज सम्भव है।

केंद्र सरकार और राज्य सरकारें समय-समय पर राष्ट्रपति से अनुमति प्राप्त करने के लिए प्रस्ताव भेजती रही हैं, पर अंतिम निर्णय प्रायः लम्बित रह जाता है। 1977 में गठित एक समिति ने भी उच्च न्यायालयों में भारतीय भाषाओं के प्रयोग की अनुशंसा की थी। इसके बाद भी सर्वोच्च न्यायालय और मुख्य न्यायमूर्तियों ने बार-बार यह कहते हुए रोक लगाई कि न्यायिक व्यवस्था में एकरूपता और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए अंग्रेजी ही उपयुक्त है।

18वें विधि आयोग ने 2008 की अपनी 216वीं रिपोर्ट में सर्वोच्च न्यायालय में हिंदी को अनिवार्य बनाने को अव्यावहारिक बताया था। इस विरोधाभासी स्थिति का परिणाम यह हुआ कि जहां अधीनस्थ न्यायालयों में जनता को उनकी भाषा में न्याय मिलता है, वहीं उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय अंग्रेजी के दुर्ग बने हुए हैं। आम वादकारी, जो कदाचित् अंग्रेजी का एक शब्द भी न जानता हो, अपने ही मुकदमे की भाषा को समझ नहीं पाता और पूरी तरह वकीलों पर निर्भर हो जाता है। यह लोकतांत्रिक न्याय की अवधारणा के प्रतिकूल है क्योंकि न्याय वही है जो समझ में आए। यदि निर्णय और आदेश जनता की भाषा में होंगे तभी न्याय सचमुच सुलभ होगा।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि न्याय की भाषा केवल औपचारिकता का विषय नहीं है। यह न्याय तक पहुंच का प्रश्न है। यदि जनता निर्णयों को पढ़कर समझ सकेगी तभी वह न्याय व्यवस्था पर विश्वास करेगी। वर्तमान में अंग्रेजी के प्रभुत्व ने सामान्य नागरिक और न्यायपालिका के बीच एक दूरी बना दी है। इस दूरी को कम करने का एकमात्र उपाय यही है कि न्यायालयों में भारतीय भाषाओं को उनका यथोचित स्थान मिलें। भारतीय न्यायपालिका में भाषा का प्रश्न केवल हिंदी बनाम अंग्रेजी का विवाद नहीं है। भारत बहुभाषी देश है और प्रत्येक राज्य की अपनी भाषाई पहचान है। इसलिए यह संघर्ष इस बात का भी है कि क्या न्यायिक व्यवस्था प्रत्येक राज्य की भाषा में जनता तक पहुंचेगी। अनुच्छेद 348(2) ने इस सम्भावना को जीवित रखा है। यदि राज्य सरकारें और केंद्र मिलकर गम्भीरता से प्रयास करें तो यह बाधाएं समाप्त की जा सकती हैं।

Finest Saffron In The World
5g
50mg
1g
Pack Size Available
0.25g
0.5g
PURE & NATURAL
Haldiram's
Benefits Of Saffron
• Boosts Brain Health
• Improves Digestion
• Improves Vision
• Prevents Hair Loss
Haldiram's
Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT
TM
केसर तिलक
★दिव्यता ★समृद्धि ★शुभ भाग्य
★संपत्ति ★कैरियर के अच्छे अवसर
अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।
तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।*
ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*
केसर तिलक कैसे तैयार करें
कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।
*Data on file
GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

लोकगीतों व लोककलाओं में हिंदी का स्थान

मनोज कुमार 'बच्चन'

विवाह, जन्म, त्योहार, प्रेम-प्रसंग पर हिंदी लोकगीत सुनाई देते हैं। नौटंकी, नाटक, नुक्कड़ आदि में हिंदी और उसकी बोलियां प्रयुक्त होती हैं। कठपुतली, कजरी, फाग जैसी लोककलाएं हिंदी की ही देन हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लोक भाषाओं और फारसी मुक्त उर्दू के आधार पर खड़ी बोली का विकास किया। आज हम जो हिंदी बोलते हैं, वह भारतेंदु की ही देन है। वे चाहते थे कि हिंदी आमजन की भाषा बने। उन्होंने कहा - निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति के मूल, यानी अपनी भाषा की उन्नति ही सब प्रकार की उन्नति का आधार है।

हालांकि लोकशब्द का हमारे प्राचीन ग्रंथ जैसे वेद, उपनिषद एवं भारत मुनि के नाट्यशास्त्र में बहुधा प्रयोग हुआ है। पाणिनि ने भी वेद से पृथक लोकसत्ता को स्वीकारा है। भारत में वैदिक काल से लोकगीतों की परम्परा देखने को मिलती है। इस संदर्भ में डॉक्टर इंदु यादव ने लिखा है कि वैदिक युग में भी सुंदर लोकगीत गाए जाते थे। यह गीत गाथाओं के नाम से चर्चित हैं। सुख-दुःख, जन्म-विवाह, संस्कार, मेले, देव पूजन आदि के अवसर पर पारम्परिक रूप से लोकगीत आज भी गाए जाते हैं। म. गांधी ने लोकगीतों को संस्कृति का पहरेदार कहा है। इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका के लेखकों ने लोकगीतों को मनुष्य की उत्पत्ति एवं विकास और रीति रिवाजों की विधा कहा है।

भारत के विविध राज्यों की अलग-अलग बोली एवं भाषाएं हैं। एक प्रचलित कहावत है 'कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी', यानी हमारे यहां कुछ किलोमीटर पर भाषा का रूप बदल जाता है जो देश के विशाल सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता को दर्शाता है। बिहार राज्य में पांच क्षेत्रीय भाषाएं हैं। अंगिका, मैथिली, मगधी, बज्जिका एवं भोजपुरी। खानपान से लेकर सभी की अपनी लोक संस्कृति है। यदि सूक्ष्मता से देखा जाए तो सभी में थोड़ी विविधता दिखाई देगी। हमारे समाज में जो 16 संस्कार हैं, वह सदियों से चला आ रहा है। ये सांस्कृतिक प्रवाह कभी रुका नहीं है, अनवरत चला आ रहा है। सभी की अपनी लोकगाथा, लोकगीत, लोकचित्र, लोकनाट्य हैं।

आज मिथिला की लोकचित्र शैली अपनी वैश्विक पहचान बना चुकी है। मैथिल कोकिल विद्यापति 14वीं सदी के कवि थे और निर्विवाद रूप से उनका यश 16वीं सदी के अंत तक समस्त पूर्वी भारत में व्याप्त हो चुका था। यह दौर भारत में उथल-पुथल का दौर था। लोकभाषा धीरे-धीरे साहित्यिक भाषा के रूप को ग्रहण करती है। लोकभाषा में जो अभिव्यक्तियां होती हैं, उसमें सहज ही लोग तत्व रहता है, पर यह स्पष्ट है कि हिंदी में जब लोकभाषा का प्रयोग होने लगा उस समय लोकभाषा साहित्य की ओर बढ़ रही थी। लोकभाषा के अपने स्वाभाविक स्वरूप बहुत काल तक अक्षुण्ण रहा। साहित्य रचना में प्रवृत्त होने पर भी उसने अपना लोकसम्पर्क घनिष्ठ बनाए रखा।

हिंदी ने जब जन्म लिया तो उस दौर में पूरे भारत में उथल-पुथल का वातावरण था। इतिहास की नीति बदलती रही, सांस्कृतिक संघर्ष हुए। कई प्रकार की विकृतियां उत्पन्न हुई जिसने साहित्य में अपनी सत्ता प्रकट की और साहित्य की इन्हीं तरंगों के कारण लोक सम्पर्क को आधार के रूप में बार-बार ग्रहण करना पड़ा। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक उद्वेलन जब तक चलते रहे साहित्य का लोकसम्पर्क घनिष्ठ बना रहा। जब यह उद्वेलन शिथिल हो गए तभी साहित्य ने युग युगीन प्रवृत्ति को प्रकट करने वाले साहित्य के रूप को स्थिरतापूर्वक ग्रहण कर लिया। साहित्य में नए-नए काव्य रूपों का प्रवेश हुआ। 7वीं सदी से 16वीं सदी तक यह उद्वेलन चलते रहे।

आज भी हिंदी में लोकभाषाओं के शब्द स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। लोकसाहित्य के अंतर्गत लोकगीत, लोकगाथा, लोकनाट्य एवं लोकचित्र आते हैं।

लोकगीत- लोकगीत मानव मन का उल्लासमय संगीत है। इसमें सुख भी है, दुख भी है। जीवन में कोई भी ऐसा अछूत प्रसंग न हो जिस पर लोकगीत ना प्राप्त होते हैं। सामान्य रूप से इसकी गायन की मौखिक परम्परा रही है, इसे लोग साहित्य की धड़कन भी कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसलिए सुनने में ये हमेशा रमणीय लगते हैं। इसके जन्म की कोई निश्चित काल रेखा नहीं है, परंतु मौलिक परम्परा के रूप में निरंतर आज भी ग्रामीण अंचलों में इसका स्वरूप यथावत बना हुआ है।

लोकगाथा- लगभग देश के सभी राज्यों में लोकगाथा विद्यमान है। सम्भवत लोकगाथा संगीत में रचना होती है जिसमें स्थानीय वीर पुरुषों के साहस-संघर्ष एवं उनकी गरिमा का गुणगान किया जाता है। इसकी भाषा सहज, सरल एवं कृत्रिम होती है। उदाहरण के लिए बिहार में हिरणी बिरनी, राजा सहलेश, बिहुला विषहरी, जट-जटिन मालवा में भर्ती हरी और गोपीचंद की गाथा राजस्थान में ढोल मारू तथा बुंदेलखंड में हरदौल की लोगगाथा वहां के जनमानस को सदियों से अनुरंजित करती रही हैं। लोकचित्र- पूरे भारतवर्ष के सभी राज्यों में लोकचित्रण की परम्परा रही है। इसमें स्थानीय लोकनायक, पौराणिक ग्रंथों के पात्र के साथ साथ पर्व तीज, त्यौहार से सम्बंधित चित्र सृजित किए जाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि लोक साहित्य के बिना हमारा हिंदी साहित्य अधूरा है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। हिंदी भाषा यदि शरीर है तो लोकसाहित्य उसकी आत्मा है।

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

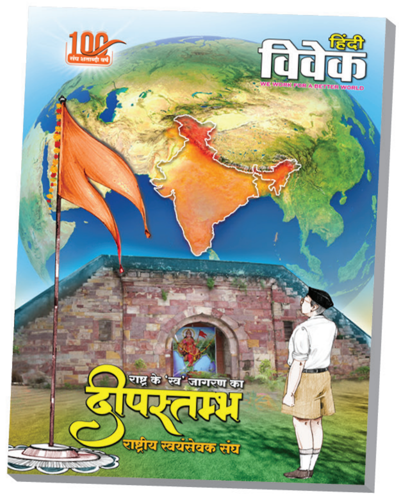

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

बॉलीवुड

सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा हिंदी की लोकप्रियता में सर्वाधिक योगदान हिंदी सिनेमा का है। यहां तक कि गैर हिंदी फिल्मी कलाकारों की भी आकांक्षा होती है हिंदी फिल्मों में काम कर एक अपनी अलग पहचान बनाने की।

सिनेमा में हिंदी की भूमिका

सिनेमा... एक कला, एक व्यवसाय, एक कृत्रिम संसार, एक चकाचौंध, एक छलावा, एक दुस्वप्न, एक सच्चाई, इन विशेषणों में आप कोई भी मनपसंद विशेषण छांट सकते हैं, पर एक बात तो तय है कि हम लाख चाहकर भी सिनेमा को अपनी दुनिया से अलग नहीं कर सकते हैं।

क्या सचमुच सिनेमा जैसी लोकप्रिय और मनोरंजन करने वाले माध्यम की उपेक्षा की जा सकती है? इसका एकमात्र उत्तर है नहीं, कतई नहीं! क्या आप सिनेमाघर के रास्ते से निकलते हुए अपनी आंखें मूंद सकते हैं? इसका भी उत्तर है नहीं, कतई नहीं!

भारत की पहली मूक फिल्म राजा हरिश्चंद्र से शुरू हुई फिल्मी यात्रा आज तक अपनी लय पर थिरक रहा है तो इसकी आधारभूत कथा के जनक धुंडिराज गोविंद फाल्के को इसका श्रेय जाता है। मूक फिल्मों से पहली सवाक फिल्म 'आलम आरा' के बाद सवाक फिल्मों का जब दौर शुरु हुआ तो अनायास स्वाभाविक रूप से इसे हिंदी सिनेमा के विकास की शुरुआत मानी गई। हिंदी सम्पूर्ण भारत में एक ऐसी भाषा के रूप में मान्य हुई जिससे देश के हर क्षेत्र के जनमानस को स्नेह और हिंदी के प्रति सम्मान है।

राजीव रोहित

सिनेमा जगत राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रभाव से कभी अछूती नहीं रही है। यह भी सच है कि भाषा के आधार पर सिनेमा उद्योग भी पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण क्षेत्र में बंटा हुआ है। इसके बावजूद निर्विवाद रूप से हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता का प्रतिशत राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी भाषा के सिनेमा से कहीं ज्यादा है। इस लोकप्रियता में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका हिंदी फिल्म के संवादों की है। यह हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता का ही प्रभाव है कि देश के किसी भी भाषा के सिनेमा जगत का अभिनेता हो, निर्देशक हो, लेखक हो, उसके फिल्मी जीवन की सबसे बड़ी इच्छा यह होती है कि उसे अपने कैरियर में कम से कम एक हिंदी फिल्म होनी ही चाहिए। अपनी अभिनय प्रतिभा से वो राष्ट्रीय भाषा की लोकप्रियता में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान करे। कई कलाकार तो इसके लिए हिंदी सीखने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। आज दक्षिण भारत के अभिनेता या पूर्व क्षेत्र की मुख्य भाषा बंगाली फिल्मों के अभिनेता यदि पूरे देश में लोकप्रिय हैं तो इसका सबसे बड़ा कारण हिंदी भाषा ही है।

स्वाभाविक रूप से हिंदी सिनेमा जगत का सम्बंध क्षेत्रीय भाषा के सिनेमा से जुड़ जाता है। इसका एक लाभ यह होता है कि दक्षिण और पूर्व

क्षेत्र के सिनेमा जगत के कलाकार जब हिंदी सिनेमा की तरफ अपने कदम बढ़ाते हैं तो उनके प्रशंसक भी हिंदी सिनेमा के मोह से प्रभावित होने से खुद को नहीं रोक पाते हैं। वो अपने अभिनेता के बोले गए संवादों की नकल करते हैं। इस तरह वो चाहे-अनचाहे हिंदी भाषा से जुड़ जाते हैं। उनकी दैनिक जीवनशैली में हिंदी का प्रभाव दिखाई देता है।

सबसे बड़ी बात यह कि हमारे फिल्मी सितारे जो मूल रूप से हिंदी फिल्मों के अभिन्न अंग होते हैं। उनके अभिनय के प्रशंसकों में गैर हिंदी भाषी भी शामिल होते हैं। जब कोई हिंदी फिल्म दक्षिण भारत के किसी शहर में सिलवर जुबली या गोल्डेन जुबली मनाती है तो किसी को आश्चर्य नहीं होता। हिंदी सिनेमा के सितारे यदि देशभर में लोकप्रिय हैं तो यह हिंदी सिनेमा का ही प्रभाव है। हिंदी ने भाषायी स्तर पर अपनी सरलता और सहजता से फिल्मों के माध्यम से पूरे देश को जोड़कर रखा है।

भले ही अहिंदी भाषी फिल्मों के संवाद अपने आपसी व्यवहार में टूटी-फूटी हिंदी का प्रयोग करें, पर इसमें भी उनका हिंदी के प्रति प्यार झलकता है। एक समय था जब मल्टीस्टार वाली फिल्में बनती थीं तो उनमें हिंदी-अहिंदी भाषी सिनेमाजगत के सितारों को एक साथ परदे पर देखने का एक अलग ही आनंद था। सितारों के प्रशंसक बनने में कोई असहजता नजर नहीं आती थी। अपने मनपसंद नायकों और नायिकाओं की तरह केश-सज्जा रखने और उनके कपड़े पहनने के स्टाईल की नकल मारने में उनके प्रशंसक गर्व अनुभव करते थे। न केवल उनके द्वारा बोले गए संवादों को आत्मसात करना बल्कि उनके बोलने के अंदाज की कॉपी करना अपने दैनिक दिनचर्या का हिस्सा मानते थे। ये सब हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए गम्भीर प्रक्रियाएं नहीं थीं।

यह बिल्कुल सहज और सरल सत्य है कि हिंदी को लोकप्रिय भाषा बनाने के लिए जो कार्यक्रम सरकारी स्तर पर लाखों-करोड़ों खर्च करके किए जाते हैं, वो महज एक औपचारिकता बनकर रह जाती है। लोकप्रियता बढ़ाने का वही काम एक हिंदी फिल्म के सौ-दो सौ रूपए की टिकट कर देती है। टिकट खरीदो और हिंदी सिनेमा की दुनिया में डूब जाओ। तीन घंटे आप हिंदी नाच-गाने और संवादों का आनंद लें और आप जब बाहर निकलें तो हिंदी के संवाद बोलते या गीत गुनगुनाते हुए निकलें।

●●●

आगामी विशेषांक

हिंदी विवेक
We Work For Better World

मूल्य ₹50/-

विशेषांक में समाहित विषय

- राष्ट्रीय एकात्मता पुरुष: सरदार वल्लभभाई पटेल।
- नरेंद्र मोदी की दृष्टि से सरदार पटेल।
- सोमनाथ मंदिर और वल्लभभाई पटेल।
- कश्मीर: सरदार पटेल की दृष्टि में।
- सरदार पटेल के चुनिंदा भाषण।
- मुस्लिम प्रश्न और वल्लभभाई पटेल।
- राजकोट सत्याग्रह और सरदार।
- सरदार पटेल का पारिवारिक जीवन।
- राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति एवं दूरदर्शिता।
- सरदार देश के पहले प्रधानमंत्री बनते तो....
- स्टेचू ऑफ़ यूनिटी का निर्माण एवं उद्देश्य।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और वल्लभभाई पटेल।
- संस्थानों का स्वतंत्र भारत में विलीनीकरण।
- भारत-पाकिस्तान विभाजन जिन्ना और सरदार पटेल।
- सरदार पटेल : भारतीय एवं वैश्विक मान्यवरों के विचार।
- सरदार पटेल व्यक्तित्व और अनसुने किस्से।

तथा अन्य...

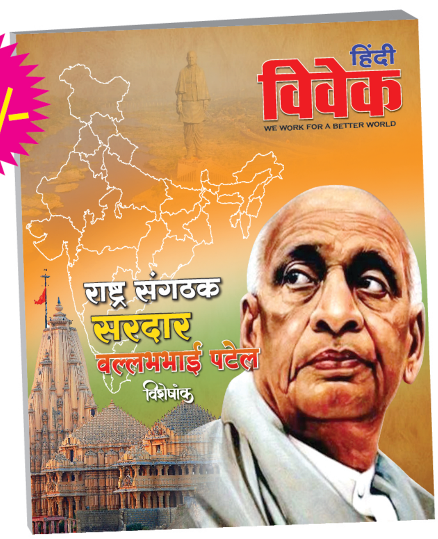

जल्द ही अपनी प्रतियां बुक करें

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of: HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

हमीं से मुहब्बत हमीं से लड़ाई

उपेक्षा

अतुल गंगवार

हिंदी सिनेमा के कई ऐसे कलाकार हैं जो पर्दे के पीछे जब वे प्रेस कान्फ्रेंस करते हैं, बाईट देते हैं या फिर किसी पुरस्कार समारोह में जाते हैं तो धड़ल्ले से अंग्रेजी बोलते हैं। क्या यह उचित है? काम तो हिंदी में करते हैं, किंतु गुणगान अंग्रेजी कावे क्यों करते हैं?

हिंदी सिनेमा के कलाकारों पर अधिकतर ये आरोप लगता है कि वे काम तो हिंदी फिल्मों में करते हैं, पर वास्तविक जीवन में अंग्रेजी भाषा में बात करना स्टेट्स समझते हैं। देखा गया है कि फिल्म पुरस्कार समारोहों में अधिकांश कलाकार पुरस्कार तो हिंदी फिल्म के लिए ले रहे हैं, किंतु जब धन्यवाद करते हैं तो अपने परिवार, गुरुओं, अपनी फिल्म के निर्देशक, सह कलाकारों को याद करते हुए अंग्रेजी में अपना भाषण देते हैं। लगता है जैसे किसी विदेशी फिल्म समारोह में आ गए हैं। यहां ये ध्यान रहे कि हम सभी कलाकारों के बारे में ये बात नहीं कर रहे हैं। कुछ ऐसे कलाकार भी है जो हिंदी के नमक का हक अदा करते हैं और अपनी बात हिंदी में रखते है। कई बार ऐसे दृश्य किसी प्रेस कान्फ्रेंस में भी दिखाई दे जाते हैं। हिंदी में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी में देते समय ये भूल जाते हैं कि वो यहां हिंदी फिल्म के प्रचार के लिए आए हैं। ये वो लोग हैं जो भारतीय सिनेमा की पहचान हॉलीवुड की तर्ज पर बॉलीवुड के रूप में करते हैं। हिंदी बोलने में अपनी हेठी समझने वाले, अंधेरे सिनेमा हॉल में रोशनी से चमकने वाले सितारे ये भूल जाते हैं ये हिंदी फिल्में ही हैं जो उन्हें नाम के साथ दाम भी दे रही हैं।

सिनेमा एक लम्बे समय से भारतीय जनता के लिए मनोरंजन का साधन रहा है। वर्ष 1913 में प्रदर्शित दादा साहेब फाल्के द्वारा निर्मित मूक फिल्म राजा हरीशचंद्र से शुरू हुई इस यात्रा ने 112 वर्ष के दौरान कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। 1931 में प्रदर्शित देश की पहली बोलती हिंदी फिल्म 'आलमआरा' ने तो मानो सिनेमा के क्षेत्र में क्रांति ला दी। इसके बाद तो देश की अलग-अलग भाषाओं में फिल्में बननी आरम्भ हो गई, परंतु

हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा थी जिसमें बनी फिल्मों ने देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया। हिंदी फिल्मों के सितारे ना केवल अपने देश में बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हुए। राजकपूर और उनकी फिल्मों ने रूस के दर्शकों के दिलों को जीता। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' जैसे गीतों ने रूस के सिने प्रेमियों को अपना दीवाना बना दिया था। मिथुन चक्रवर्ती की 'डिस्को डांसर' के गीतों की धुन पर कौन नहीं थिरका था।

स्वतंत्रता संग्राम में देशभक्ति की फिल्मों ने सारे देश को भाषा के बंधनों से तोड़ कर एकता के सूत्र में बांध दिया था। अशोक कुमार के अभिनय से सजी फिल्म 'किस्मत' के गीत, 'दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिंदुस्तान हमारा है,' ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे लोगों में मानो जान ही फूंक दी थी। ये फिल्म कलकत्ता में लगातार तीन वर्षों तक चलती रही थी।

हिंदी के सितारे दक्षिण के अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी लोकप्रिय थे। भारतीय सिनेमा के पहले सुपर स्टार राजेश खन्ना की फिल्म 'आराधना' मद्रास में 100 सप्ताह चलने वाली पहली हिंदी फिल्म थी। दक्षिण के कई सुपरस्टार इस बात को स्वीकार करते हैं कि उनके फिल्मी कलाकार बनने में हिंदी फिल्मों का बहुत योगदान है। आज सिनेमा बॉलीवुड (हिंदी सिनेमा), टॉलीवुड (तेलुगु और बंगाली सिनेमा), भोजीवुड (भोजपुरी सिनेमा), कॉलीवुड (तमिल सिनेमा), ऑलिवुड (ओडिया सिनेमा), मॉलिवुड (मलयालम सिनेमा), सैंडिलवुड (कन्नड सिनेमा), जॉलीवुड (असमी सिनेमा), पॉलीवुड (पंजाबी सिनेमा) जैसे विशेषणों से जाना जाता है। इन विशेषणों में बंटे सिनेमा को एक नया नाम देने का काम हिंदी ने किया है।

वर्तमान में पेन इंडिया रिलीज के पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण के बीच की दूरियां समाप्त हो गई हैं। विभिन्न क्षेत्रिय भाषाओं में बनी फिल्में देश की अन्य भाषाओं में डब होकर सम्पूर्ण देश और विश्व में प्रदर्शित होकर सफलता का इतिहास रच रही है। अब सितारे किसी एक भाषा के ना होकर बहुभाषी हो गए हैं और देश-विदेश में पहचाने जाते हैं। ऐसे में देशभर में बनी फिल्मों की आय का एक बड़ा स्रोत हिंदी भाषी क्षेत्र से आता है, वहीं हिंदी के सितारों का एक वर्ग अंग्रेजियत के पीछे भागता है तो दुख होता है।

यहां एक बात और भी महत्वपूर्ण है। हिंदी को लेकर क्षेत्रीय सिनेमा के सितारों का, फिल्म निर्माताओं का व्यवहार भी दोहरे मापदंड लिए हुए हैं। कई ऐसे राज्य हैं जो हिंदी का विरोध करते हैं, पर अपनी फिल्मों को हिंदी में डब करके पैसा कमाते हैं। दक्षिण की कई फिल्में हैं जिनके निर्माताओं ने हिंदी क्षेत्रों से अकूत पैसा कमाया है, पर वे अपने राज्यों में हो रहे हिंदी के विरोध पर चुप्पी साधे रहते हैं। दूर क्यों जाना, महाराष्ट्र में मराठी भाषा को बोलने के आग्रह पर जब हिंदी सितारों ने अपने मुंह सिल लिए थे, तो दूसरो से क्या आशा करना। वे चाहते तो अपने प्रशंसको से आग्रह कर सकते थे कि मराठी के सम्मान के साथ वे हिंदी का भी सम्मान करे। आखिर मातृभाषा और राष्ट्रभाषा अलग हो सकती हैं?

मुम्बई जहां अधिकतर हिंदी फिल्में बनती हैं, वहां हर उस व्यक्ति को काम मिलता हैं जो योग्य हो। इसके लिए ना तो धर्म का भेद हैं, ना जाति का, ना भाषा का, ना राज्यों का, ना ही देश-विदेश का। भारतीय सिनेमा में अनेक विदेशी कलाकार काम कर रहे हैं जिन्हें सिनेमा प्रेमियों का प्यार मिल रहा है। प्रश्न केवल इतना ही है जो भाषा आपको सम्मान दिला रही है वो भाषा अपने सम्मान के लिए किसकी ओर देखे? हिंदी का सम्मान जब हिंदी फिल्मों के सितारे नहीं करेंगे तो दूसरी भाषाओं के सितारों से क्या आशा करना।

आज कई ऐसे कलाकार हैं जो अपनी बोलचाल में, सार्वजनिक जीवन में गर्व के साथ हिंदी का प्रयोग करते हैं। इससे उनके प्रशंसको के बीच उनकी कीमत कम नहीं हो जाती। जहां आवश्यक हो वहां अंग्रेजी या किसी और भाषा का प्रयोग करने में कोई बुराई नहीं है, परंतु मात्र स्टेट्स सिंबल के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग करना और हिंदी को हेय दृष्टि से देखना उचित नहीं है। हमारे सितारों को ये नहीं भूलना चाहिए आज जिन ऊंचाईयों पर वो खड़े हैं, वहां तक उन्हें पहुंचाने का काम उन दर्शकों ने किया है जो हिंदी बोलते, समझते हैं। सत्य तो यही है कि आप माने या ना माने हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसने पूरे देश को सिनेमा के माध्यम से एक सूत्र में बांध रखा है।

●●●

मुकेश जोशी

वीक हिंदी वालों का हिंदी वीक

भारत सरकार के उपक्रम का एक दफ्तर यानी एन ऑफिस ऑफ गवर्नमेंट ऑफ इंडियाज इंटरप्राइज। दफ्तर के लोकल मैनेजर ने बेल बजाकर ऑफिस सुपरिंटेंडेंट को बुलवाकर स्ट्रिक्टली' कहा ''भई देखो, अभी जोनल मैनेजर का 'फैक्स मैसेज' आया है, जिसमें 'फोर्टीन्थ सेप्टेंबर' गवर्नमेंट की 'नेशनल लेंग्वेज पॉलिसी' को 'फालो' करते हुए 'हिंदी वीक' 'सेलिब्रेट' करने के 'इंस्ट्रक्शन्स' हैं और यह सब तुम्हें ही 'सेट' करना है।''

चमचा सुपरिंटेंडेंट अफसर द्वारा अपने प्रति दिखाए गए विश्वास से अति उत्साहित होकर हमेशा की तरह कोर्निश मारने वाले स्टाइल में, ओ.के. बॉस वाले अंदाज में लगभग बोला- ''सर, इट इज वेरी इजी फॉर अस, अभी 'अरेन्ज' करवा लेते हैं।''उसने दफ्तर के टू-वे 'वर्क सिस्टम' का निर्वाह करते हुए अपने नीचे के एक मुंह लगे क्लर्क को टेबल पर बुलवाया और बोला- 'बॉस ने हिंदी वीक मनाने के इंस्ट्रक्शंस दिए हैं और इसमें पूरे हफ्तेभर के कार्यक्रम मैनेज करना है। 'मुंह लगे क्लर्क ने भी 'यस सर' वाला ही अंदाज रखा, पर उसके 'क्लेरिकल माइंड' में एक 'लघुशंका' उत्पन्न हुई और उसने सुपरिंटेंडेंट के उस कान में, जिसमें खुद सुपरिंटेंडेंट कभी काड़ी, कभी स्कूटर की चाबी तो कभी बालपेन फुर्सत के क्षणों में घुमाता रहता था, मुंह ले जाकर कहा- 'सर, प्रोग्राम तो सब हो जाएंगे, पर बजट कितना आया है, ये तो पता चले।' इस महत्वपूर्ण 'क्लेरिकल एडवाइज' पर सुपरिंटेंडेंट साहब की भी ट्यूब जली। वे सीधे बॉस के केबिन में घुसे और उन्होंने खीसें निपोरकर हिंदी वीक प्रोग्राम के लिए बजट का प्रश्न उठाया। बॉस बोले- 'डोंट वरी, बी हैप्पी, इट्स नाट योर प्रॉब्लम। सब हो जाएगा।' और सुपरिंटेंडेंट हफ्ते भर की बजट सम्बंधी जिज्ञासाओं से आश्वस्त होकर 'बी हैप्पी' की मुद्रा में बाहर आ गए। उन्होंने टेबल पर आते ही अपने उसी विश्वस्त क्लर्क की बजट सम्बंधी जिज्ञासाएं शांत कीं और दफ्तर में चहल-पहल शुरू हो गई। सुपरिंटेंडेंट ने फरमान निकाला- ''फटाफट 15-20 मिनट में सारे वीक के लिए बढ़िया 'प्रोग्राम सोचकर लाएं फिर उन्हें 'फाइनलाइज' कर लिया जाएगा।'' दफ्तर में सारे कामकाज ठप्प हो गए और सारा स्टाफ हिंदी की सेवा में जुट गया। गणेशोत्सव, नवरात्रि जैसे मोहल्ला स्तर के कार्यक्रम होते तो 'सिर्फ एक मिनट' में सात दिन के कार्यक्रम बना कर रख देते, किंतु ओफ ये हिंदी वीक। दफ्तर के सारे बाबू-बॉबी एक-दूसरे से अलग-अलग और समूहों में परामर्श करने लगे। पांच-सात मिनट तो बातों के कोलाहल में ही खर्च हो गए, फिर लेडीज फर्स्ट की अवधारणा को सही सिद्ध करते हुए दफ्तर में हमेशा बातों के जरिए निंदा रस घोलने तथा स्वेटर बुनाई की मशीनों की तरह काम करने वाली महिला क्लर्कों की तरफ से पहला 'प्रपोजल' उठाया गया- 'सर, अंताक्षरी कैसी रहेगी?' कहीं से एक पुरुष स्वर आया, इन 'लेडिजों' को तो 'अंताक्षरी' के अलावा कुछ आता ही नहीं है। एक ज्यादा वाचाल महिला क्लर्क तुरंत प्रत्याक्रमण की मुद्रा में बोली- 'हमें अचार, चटनी, सलाद बनाना भी आता है, कहो तो....।' सुपरिंटेंडेंट ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर कहा- 'प्लीज साइलेंट, अंताक्षरी का आइडिया क्रिएटिव है। भई, हिंदी फिल्मों के गीतों ने तो हिंदी को न सिर्फ सारे इंडिया, वरन् वर्ल्ड के दूसरे कंट्रीज में भी पहुंचाया है, इसलिए फर्स्ट-डे अंताक्षरी फाइनल। 'दूसरे दिन के लिए एक अधेड़ उम्र के बाबूजी, जो खुद को 'लिटरेरी टेस्ट' का आदमी मानते थे,

ने सुझाव दिया- चूंकि सर, यह हिंदी सप्ताह है और इसमें नगर के हिंदी से जुड़े कुछ लोगों को भी जोड़ना चाहिए (दफ्तर के लोग जानते थे कि दो-चार लोकल कवियों से इन बाबूजी की अच्छी पटती थी और खुद वे भी आड़ी-तिरछी कविताएं लिख लेते थे, अत: वे अपने इन कवि मित्रों को 'ओब्लाइज' करना चाहते थे) क्यों न हम 'काव्य गोष्ठी' जैसा कोई आयोजन रख लें? बाबूजी की सीनियरिटी को देखकर हालांकि कोई कुछ नहीं बोला, पर किसी ने इस प्रस्ताव पर उत्साह नहीं दिखाया। फिर भी एक फुसफुसाहट तो सुनाई आ ही गई कि 'ये बोर करे बिना नहीं मानेंगे, ये फोकटिए लोकल कवि गले फाड़-फाड़कर तो अपने प्राण ही ले लेंगे।' दूसरे ने इस पर मौन सहमति जताई। सुपरिंटेंडेंट ने पूरी गम्भीरता दिखाते हुए कहा- 'ठीक है, सेकंड डे लोकल पोएट्स के नाम। उन्हें कोई नहीं सुनता तो क्या, वे कर तो हिंदी की सेवा ही रहे हैं', पर उन्हें बुलवाने की 'रिस्पॉन्सिबिलिटी' सुपरिंटेंडेंट ने उन बाबूजी पर ही डाल दी। तीसरे दिन 'राष्ट्र के विकास में हिंदी का योगदान' सब्जेक्ट पर 'ऐसे कॉम्पीटिशन'(निबंध प्रतियोगिता) का प्रपोजल खुद सुपरिंटेंडेट साहब ने रख दिया। उनके प्रस्ताव का विरोध तो होना ही नहीं था, फिर भी उनका मुंहलगा क्लर्क बोला- ''सर, हिंदी में 'ऐसे' लिखना 'डिफिकल्ट' हो जाएगा। क्यों न कोई 'स्लोगन कॉम्पीटिशन' बजाय 'ऐसे' के करवा लें। इसमें टाइम भी 'सेव' होगा सर। ''सुपरिंटेंडेंट हिंदी के योगदान को लेकर चूंकि काफी गम्भीर थे, इसलिए उन्होंने संशोधन का प्रस्ताव 'रिजेक्ट' करते हुए उसी क्लर्क को कहा कि अब फोर्थ-डे का प्रोग्राम तुम ही सजेस्ट करो। एकदम उस क्लर्क की खोपड़ी में कोई प्रोग्राम नहीं आया। फिर उसे टी.वी. कार्यक्रम ध्यान में आने लगे। एकाएक उसकी खोपड़ी 'क्विज़' पर आकर रुक गई। उसने तत्काल कहा- 'सर, क्विज़ रख ले?'सुपरिंटेंडेंट के असहमत होने का प्रश्न ही नहीं था, पर 'क्विज़' को लेकर कई 'प्रश्न' पहले ही खड़े हो गए। 'क्विज' में कितने लोग 'पार्टीसिपेट'कर पाएंगे। सुपरिंटेंडेंट ने अपने प्रिय बाबू के 'सजेशन' पर पानी फिरता देख, स्टाफ के अन्य लोगों की कमजोरियों को देखते हुए 'क्विज' को सिर्फ फिल्म, सीरियल्स तथा क्रिकेट पर केंद्रित कर दिया। पांचवें दिन के लिए जब किसी को कोई कार्यक्रम नहीं सूझा तो सुपरिंटेंडेंट ने स्टाफ से कहा- 'हरी-हरी, जरा फटाफट कोई प्रोग्राम सोचो। लास्ट टू डेज़ बचे हैं। प्रोग्राम चाकआउट करना है, बॉस वेट कर रहे हैं।' इतने में सुझाव आया कि कोई लाइट मूड का प्रोग्राम रखा जाए, अत: उस दिन 'आफिशियल कन्सेन्सस' से स्टाफ के बच्चों की मोनो एक्टिंग, रेकॉर्ड एक्शन जैसे कल्चरल प्रोग्राम रखे गए। इसमें स्टाफ की फैमिलियों का 'गेट टु गेदर' भी हो जाने की सम्भावनाएं बताई गईं। छठे दिन 'हाउजी तंबोला' के प्रस्ताव पर सब उछल पड़े। इसे टेस्ट चेंज करने वाला कार्यक्रम निरुपित किया गया और 'वीक एंड' पर प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन तथा बॉस की 'स्पीच' जैसे 'ट्रेडीशनल'कार्यक्रम की नोटशीट सुपरिंटेंडेंट ने बॉस के सामने 'पुटअप' कर दी।

आमतौर पर अधिकारी जब तक कोई बहुत खास बात नहीं होती, दिमाग पर जोर नहीं देते, इन्होंने भी यही किया। हिंदी वीक की नोटशीट को सरसरी तौर पर देखा और 'एज प्रपोज्ड' की टिप्पणी लिखकर अंग्रेजी में ही अपने 'इनीशियल' ठोक दिए। यथासमय, यथास्थान कार्यक्रम हुए, स्टाफ ने अपनी रुचि के अनुसार प्रोग्रामों को पसंद-नापसंद किया। अंतिम दिन 'प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन' के बाद बॉस ने 'स्पीच' झाड़ी- 'डियर फ्रेंड्स, आप सब 'वेलनोन' हैं कि हमने अपनी 'नेशनल लेंग्वेज' हिंदी के सम्मान में हिंदी वीक मनाया। आप सभी ने 'पार्टीसिपेट' भी किया। हम सबने देखा कि हिंदी में कितने अच्छे-अच्छे काम हो सकते हैं। हमें अपना सारा काम 'फ्यूचर' में भी हिंदी में ही करते हुए हिंदी को 'डेवलप' करना है। हिंदी बोलनी ही पड़ती है। देखिए, अभी हिंदी वीक में हमारे बच्चों ने कितने अच्छे कल्चरल प्रोग्राम किए। आजकल आप देख रहे हैं कि कल्चर में कितना चेंज आ गया है। पॉप सांग्स और रैप भी हिंदी में गाए जाने लगे हैं।

सो फ्रेंड्स, वन्स अगेन, मैं ज्यादा कुछ कहना नहीं चाहता। बस आप लोग अपना कम्पलीट काम हिंदी में ही करें। इसमें किसी को कोई प्रॉब्लम आ रही हो तो मुझसे कंसल्ट करें और आप सबने जिस कोआर्डिनेशन से इस हिंदी वीक को 'सक्सेस' बनाया, उसके लिए मैं 'थैंक्स पे' करता हूं। मैं 'जोनल ऑफिस' को हिंदी वीक की एक्टिविटीज की रिपोर्ट सेंड करूंगा, उसमें आप सभी के 'कांट्रीब्यूशन तथा परफारमेंस' का भी उल्लेख किया जाएगा। ''अधिकारी का भाषण समाप्त हो चुका था।

हिंदी महीने के श्राद्धपक्ष के आस-पास ही राष्ट्रभाषा हिंदी का 'श्राद्ध' मनाए जाने की परम्परा इसी तरह जारी है।

आओ हिन्दी दिवस मनाएं...

कोई माने, ना माने, पर हिंदी भाषा,
विविध रूप में आज हृदयों में छाई।
स्वयं मोदीजी ब्रांड एम्बेसडर हैं,
सभी मंचों पर हिंदी देती सुनाई।।

बना विश्व बाजार, हिंदी जरूरी,
बिना इसके कैसे सफलता मिलेगी।
विवशता कहें या जरूरत कहें हम,
हिंदी सीखकर ही सहजता खिलेगी।।

खड़ी बोली को ही, न हिंदी हम समझें,
समाविष्ट इसमें अनेक भाषाएं।
यह हिंदी का औदार्य है, शक्ति भी है,
जुड़ी हैं अनेक की इससे आशाएं।।

संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश में शुचि,
प्रवाहित रहीं जन की जो भावनाएं।
जो देवनागरी लिपि में आबद्ध होकर,
लुभाईं मनस् को वे हिंदी कहाएं।।

सभी लोक भाषाएं हिंदी हैं सच में,
है विस्तृत हृदय, हिंदी-महिमा निराली।
विदेशों में भी इसकी उन्नत पताका,
हिंदी के बिना, सब कुछ लगता है खाली।।

न समझें दक्षिण भारत अनभिज्ञ इससे,
दबे स्वर में स्वीकार हिंदी की सत्ता।
अगर केंद्रीय अधिकारी बनना किसी को,
तो मानना जरूरी है हिंदी-महत्ता।।

सभी जानते राजभाषा है हिंदी,
अघोषित है भारत की यह राष्ट्रभाषा।
यह जनभाषा लोगों के हृदयों को जोड़े,
नहीं कोई दे सकता है इसको झांसा।।

है आबादी सबसे अधिक बोलते जो,
सही मायने में यह है विश्व भाषा।
है उज्ज्वल भविष्य जो कि स्वीकार सबको,
चाहे ईसरो हो, चाहे वह हो नासा।।

हैं संस्थाएं अगणित, समर्पित हिंदी-प्रति,
सहर्षित जुड़ीं इसमें प्रतिभाएं प्यारी।
चतुर्दिक् हिंदी का ही है बोलबाला,
वे अनथक लगी हैं, अनवरत हैं जारी।।

आया चौदह सितम्बर, हिंदी-दिवस जो,
चलो हम सहर्षित, इसे फिर मनाएं।
करें याद इतिहास और संस्कृति को,
सुगंधित करें हम दशाएं-दिशाएं।।

– कवि मार्कण्डेय त्रिपाठी

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

Build
MORE THAN A HOUSE

Build trust, security, and belonging with
TJSB Housing Loan

up to ₹3 CR. From 8.10%* p.a.

*T&C Apply

www.tjsb.bank.in | : 022-48897204